(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 8, फरवरी, 2020
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण यादगार महाशिवरात्रि पर्व की
आप सबको बहुत-बहुत बधाई

दिल्ली (लाजपत नगर) - भारत के गृहमन्त्री भ्राता अमित शाह से ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु.चन्द्रा बहन उनके साथ।

हमीरपुर - हमीरपुर उत्सव के समापन पर हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल भ्राता बण्डारु दत्तात्रेय जी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित करने के पश्चात् ब्र.कु.ज्योति बहन तथा ब्र.कु.सारिका बहन उनके साथ।

पणजी (गोवा)- गोवा के मुख्यमंत्री डॉ.प्रमोद सावन्त को शुभकामना देते हुए ब्र.कु.सुरेखा बहन तथा ब्र.कु.निर्मला बहन।

ओ.आर.सी.(गुरुग्राम)- सुरक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एन.सी.आर.बी. के महानिदेशक भ्राता रामफल पवार, रेलवे सुरक्षा बल के अतिरिक्त महानिदेशक भ्राता पी.के.अग्रवाल, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, ब्र.कु.अशोक गाबा भाई, ब्र.कु.सतो भाई तथा अन्य

वडोदरा- गुजरात के मुख्यमन्त्री विजय भाई रूपाणी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अरुणा बहन

सिरसा (शान्ति सरोवर)- हरियाणा के उप-मुख्यमंत्री भ्राता दुष्यंत चौटाला जी, ब्र.कु.बिन्दु बहन को सम्मानित करते हुए।

शिव का अवतरणोत्सव – शिवरात्रि

संसार के सभी ईश्वर-विश्वासी लोग मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी हैं। भगवान को कल्याणकारी एवं हितैषी मानने के कारण ही उन्हें माता-पिता, बन्धु-सखा इत्यादि स्नेह-सूचक एवं शुभ सम्बन्धों से याद किया जाता है। अत: सब प्रकार से सबका कल्याणकारी होने के कारण भगवान का कर्त्तव्य-वाचक और सम्बन्ध-वाचक स्व-कथित नाम 'शिव' है। किसी का कल्याण करने के लिए उसे कर्म की गति का ज्ञान देना और उसके आगे कर्म का व्यवहारिक आदर्श उपस्थित करना तथा उसकी सहायता और मार्ग-प्रदर्शना करना जरूरी है। अत: मानना पड़ेगा कि भगवान् ने कभी इस धरनी पर आकर मनुष्यात्माओं को सन्मार्ग दर्शाया है, उन्हें सुमति दी है, उन्हें सुधारा है और उनके विषय-विकारों को हरा है, इसी कारण ही तो आज भी जब किसी का मन विषय-विकारों से हटाये नहीं हटता तो वह भगवान से प्रार्थना करता है कि –''हे प्रभो, मेरे विषय-विकार मिटाओ, मेरे पाप हरो।'' अत: भगवान शिव के अवतरण के उपलक्ष्य में आज तक हर वर्ष भारत में शिवरात्रि का त्योहार बड़े चाव से मनाया जाता है क्योंकि जाने-अनजाने लोगों के मन में यह पूर्व-स्मृति समाई हुई है कि पहले भी जब मानव-जगत में अज्ञान-रात्रि छाई हुई थी तो भगवान उनका कल्याण करने के लिए आए थे।

स्वयंभू, अजन्मा, निराकार परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य जन्मोत्सव ही शिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। अजन्मा का जन्मोत्सव! निराकार का साकार रूप! स्वयंभू का अवतरण! कितना विरोधाभास है? क्या रहस्य है इसका? कौन-सी पहेली है यह? इस विरोधाभास से सामंजस्य स्थापित कर लेने पर, इस रहस्य का उद्घाटन हो जाने पर, इस पहेली का हल हो जाने पर, शिव के सारे रहस्य खुल जाते हैं तथा जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

आत्माओं का जन्म होता है और परमात्मा का अवतरण। आत्मा और परमात्मा में यही प्रमुख अन्तर है। कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्मायें जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता है। वह पुनर्जन्म के चक्र से परे है। कोई माँ उस सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगतपिता का कोई पिता नहीं हो सकता। परमात्मा शिव स्वयंभू है। सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाय प्रवेश करते हैं। वे योग-बल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में

(शेष भाग पृष्ठ 6 पर . . .)

अमृत-सूची

❋ संजय की कलम से	3
❋ परचिन्तन, व्यर्थ चिन्तन, मोह और वासना पर विजय (सम्पादकीय)	4
❋ हम बनने चले फरिश्ते हैं (कविता)	7
❋ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के	8
❋ पत्र सम्पादक के नाम	10
❋ अध्यात्म और ज्योतिष	11
❋ ब्रह्मचर्य एक कठिन साधना या आनन्द की यात्रा	15
❋ नहीं अब सतयुग दूर (कविता)	17
❋ गुस्से का समाधान	18
❋ शांत मन से बेहतर निर्णय	19
❋ लम्बी हो संगमयुगी जीवन की आयु	20
❋ नये ज्ञान से नया भारत	21
❋ ह्रदय हुआ परिवर्तन	23
❋ कैसे लें बदला?	24
❋ शब्दों से नहीं, व्यवहार से सिखाओ	25
❋ शिवबाबा हैं मन के सच्चे मीत	26
❋ 'काम' और 'प्रेम' में अन्तर	27
❋ सचित्र सेवा-समाचार	29
❋ सन्तोषी सदा सुखी	31
❋ सचित्र सेवा-समाचार	32

सम्पादकीय

परचिन्तन, व्यर्थ चिन्तन, मोह और वासना पर विजय

परचिन्तन को छोड़ने वाला ही आत्म-चिन्तन और प्रभु-चिन्तन में मन को लगा सकता है। परचिन्तन का त्याग ही मनुष्य को चिंता से उतारकर खुशी और खुश-मिजाजी के आसन पर आसीन करता है। यदि ध्यान से देखा जाये तो परचिन्तन एक ऐसा रोग है जो मनुष्य की आँखों, कानों, हृदय और मस्तिष्क – सबको रोगी कर देता है क्योंकि परचिन्तन वाला व्यक्ति भलाई की बात के प्रति बहरा हो जाता है, दूसरों के गुणों को देखने के समय उसकी आँखों में मोतिया उतर आया होता है, किसी की निन्दा-स्तुति सुनते समय उसके फेफड़ों की ऐसी हरकत होती है जैसे वह दमे का मरीज हो, उसका रक्त-चाप बढ़ा ही रहता है। उसके मस्तिष्क का ग्राफ उसकी खतरनाक हालत को प्रदर्शित करता है मानो रक्त की धमनियाँ फटती हों और उसके हृदय की धड़कन का रेखांकन यह प्रदर्शित करता है कि जैसे उसके हृदय पर आक्रमण हो रहा हो। इस परचिन्तन की औषधि आत्म-चिन्तन की ही गोली है जिस द्वारा ही मनुष्य का मिजाज ठंडा, तन चुस्त, मुख हँसमुख, मन मुदित, चित्त हर्षित और नींद की गोलियाँ खाये बिना मनुष्य सुख की नींद सो सकता है।

व्यर्थ चिन्तन

जिस प्रकार के संकल्पों से हमारी आध्यात्मिक उन्नति न होती हो अथवा हमारा कोई प्रयोजन सिद्ध न होता हो, उन सभी की गणना 'व्यर्थ चिन्तन' के अन्तर्गत होती है। मन के घोड़े को बे-लगाम छोड़ देना, विचारों को आवारा बना देना, मस्तिष्क को एक चंचल पक्षी की तरह से कभी इधर उड़ाना तो कभी उस शाखा पर बिठाना, बेकार की उधेड़-बुन में लगे रहना, भविष्य में भय के भूतों को देखना और गड़े मुर्दे उखाड़ना – ये सब व्यर्थ चिन्तन ही के अलग-अलग नमूने हैं। ये सब अपने मस्तिष्क को थकाने, अपने-आप को परेशान करने, अपनी शक्ति गँवाने व अपने जीवन के अनमोल समय को बरबाद करने के तरीके हैं। इसकी बजाय जो व्यक्ति लक्ष्य को अपने सामने रख कर, अपने विचारों को लक्ष्य पर केन्द्रित करता है, उसमें सर्व शक्तियाँ केन्द्रित हो जाती हैं और उसके लक्षण, लक्ष्य के अनुकूल हो जाते हैं। जो अपने विचारों को भटकाता नहीं, वही भटके हुए लोगों को राह दिखाने के निमित्त बनता है। जो बे-मतलब की बात नहीं सोचता, उसकी बात का सीधा-सीधा अर्थ, लोग जल्दी से समझ जाते हैं। जो इस तरह से अपने संकल्पों को अनमोल समझकर गँवाता नहीं, वह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि उसके संकल्पों से भी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। वह व्यर्थ चिन्तन करता ही नहीं इसलिए उसके संकल्प और वचन व्यर्थ जाते भी नहीं। उसका हरेक संकल्प लक्ष्य-भेदक अचूक बाण के समान होता है और वह बाण जहाँ लगता है, वहाँ से ही 'बाण-गंगा' प्रकट होती है, जो अनेकों की तत्काल प्यास बुझाती है। परन्तु व्यर्थ चिन्तन उसी का समाप्त हो सकता है जो सर्व-समर्थ प्रभु का चिन्तन करता है।

मोह-ममता

मोह और ममता ऐसी जंजीरें हैं, जो कारागार की जंजीरों से भी ज्यादा कड़ी हैं क्योंकि वे जंजीरें तो तन को बाँधने वाली हैं जबकि ये जंजीरें मन को बाँधने वाली हैं। मोह मनुष्य को जितना गहराई से किसी से मिलाता है, बाद में उतना ही रुलाता है। देखने में तो यह बड़ा लुभावना है परन्तु इसका अन्त बड़ा डरावना है। जो मोह की बेड़ी काट देता है, वही सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करता है। मोह, स्नेह का वैसा ही विकृत रूप है जैसे बासी खाना भोजन का विकृत रूप है। संसार में जो जेलें बनी हुई हैं, उनमें तो दूसरा ही कोई व्यक्ति, किसी कानून के अनुसार मनुष्य को जेल में डालता है परन्तु, मोह की जेल ऐसी है कि जिसमें मनुष्य स्वेच्छा से फँस जाता है और सारी उम्र कड़ा दण्ड भोगता है। जैसे चूहा किसी पदार्थ की सुगन्धि लेते हुए, अपने भविष्य को भूलकर मतिहीन हो जाता है, चूहेदानी के दरवाजे को स्वर्ग का द्वार मानकर उछलता-कूदता उसमें प्रवेश प्राप्त करता है, वैसे ही मनुष्य विवेक खोकर, मोह के फाटक के अन्दर दाखिल हो जाता है कि जहाँ से फिर उसका निकलना ही कठिन हो जाता है। अत: जो मोह को छोड़ता है, वही सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र है, वही वास्तव में विवेकवान है। वही प्रलोभनों से पराजित न होने वाला वीर है और वही नर्क के सीखचों से निकलने का साधन करने वाला सच्चा साधक है। जो मोह छोड़ता है, वही मोहिनी मंत्र को सिद्ध कर लेता है। जो देह के सम्बन्धियों तथा देह में अनासक्त होता है, उस विदेह अवस्था वाले व्यक्ति को विचित्र शक्तियों की प्राप्ति होती है। समूचे गीता-शास्त्र का तारतम्य ही यह है कि 'हे अर्जुन, तुम मोह को छोड़ो तो स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है।' इससे बड़ी और क्या सिद्धि चाहिये? सुख, सम्पत्ति, स्वास्थ्य, सुविधा, सम्मान, सात्विकता, सामर्थ्य, स्नेह – ये सभी हाथ जोड़कर मनुष्य के सामने उपस्थित हो जाते हैं; गोया कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं रहती। यदि दो शब्दों में कहना हो तो सर्व सिद्धियों का मूल मंत्र यह है कि जो सबसे मोह का नाता तोड़कर एक प्रभु में सम्पूर्ण प्यार जुटाता है, उससे सभी का प्यार जुट जाता है और उसका भी सभी से प्यार हो जाता है और वही इस भव सागर से पार हो जाता है अथवा यों कहें कि 'जो छोड़ता है, वही पाता है।'

वासना पर विजय

जिस संकल्प का मनुष्य के मन में वास न होना चाहिए, वही 'वास-ना' है और जिससे कार्य बेकार हो जाए, वही 'विकार' है। दूसरे शब्दों में 'काम' ही मनुष्य को निकम्मा बनाने वाला अथवा उसके काम बिगाड़ने वाला है। ब्रह्मचर्य से मनुष्य के संकल्प दृढ़, बुद्धि स्थिर, मन उज्ज्वल, तन स्वस्थ और कार्य-क्षमता बढ़ती है। ऐसे व्यक्ति दिनों-दिन अन्य दिव्य गुणों में भी समर्थ होते हैं। अत: यह स्वयं सिद्ध है कि जो मनुष्य विकार को छोड़ता है, वह विवेक को पाता है। जो मन में वासना को स्थान नहीं देता, उसे ही परमधाम तथा स्वर्ग में स्थान मिलता है। जो विकारों को जीत लेता है, वही मन को जीत लेता है। जो मन को ज़ीत लेता है, वही जगत को जीत लेता है। जो जगत को जीत लेता है, उसके लिए कोई भी सिद्धि अप्राप्त नहीं रहती। अत: सब सिद्धियों की विधि यह है कि मनुष्य विकारों को जीते और विकारों को जीतने की विधि यह है कि कर्मेन्द्रियों और मन को जीते और इन्हें जीतने की विधि यह है कि वह अपनी बुद्धि को सर्वशक्तिमान् परमात्मा से युक्त करे और युक्त करने की विधि यह है कि वह प्रभु-परिचय प्राप्त करे और संयम करे। निष्कर्ष यह हुआ कि संयम ही सर्व सिद्धियों का स्रोत है और असंयम ही सर्व समस्याओं का स्रष्टा है। ■■■

(पृष्ठ 3 का शेष भाग . . .)

प्रवेश करते हैं और उसके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय:लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सत्य धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं। भारतवर्ष में योगियों के परकाय प्रवेश की बात तो सर्व विदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी ईश्वर हैं।

निराकार परमात्मा शिव त्रिकालदर्शी हैं। वे सर्व आत्माओं की जन्म-पत्री को जानते हैं। उन्हें पता है कि कौन मनुष्यात्मा उनका वाहन बन सकती है। सर्व जीवात्माओं में प्रजापिता ब्रह्मा में ही इतना सर्वस्व समर्पण करने की अपूर्व क्षमता है। तभी तो शिवालयों में निराकार परमात्मा शिव के साथ उनके वाहन नन्दीगण की भी प्रतिमा स्थापित की जाती है। 'ज्ञानदाता' या तो ज्ञान सागर परम-आत्मा शिव को कहते हैं या प्रजापिता ब्रह्मा को। अवश्य ही दोनों में कुछ अभिन्न सम्बन्ध होगा। प्रजापिता ब्रह्मा को सदा वृद्ध दिखाते हैं। क्या कोई वृद्ध रूप में उत्पन्न हो सकता है? कदापि नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा का शरीर भी बच्चे के रूप में ही पैदा हुआ था लेकिन वानप्रस्थ अवस्था के पूर्व वे एक साधारण मनुष्य थे। वृद्धावस्था में परमपिता निराकार परमात्मा शिव उन्हें अपना रथ – नन्दीगण बनाते हैं और उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा की उच्चतम उपाधि देते हैं। अत: परमपिता परमात्मा के साथ प्रजापिता ब्रह्मा को भी नयी, दैवी सृष्टि का रचयिता कहा जाता है।

परमात्मा शिव का जन्मोत्सव रात्रि में क्यों?

अन्य सभी जन्मोत्सव दिन में मनाये जाते हैं परन्तु परमात्मा शिव का जन्मोत्सव रात्रि में! इसका गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य है। रात्रि अज्ञान-अन्धकार का प्रतीक है। कलियुग के अन्त में जब सृष्टि पर घोर अज्ञान-अन्धकार छा जाता है तब ज्ञान-सूर्य परमात्मा अवतरित होकर चतुर्दिक् ज्ञान-प्रकाश बिखेर देते हैं तथा सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना कराते हैं। अत: परमात्मा का अवतरण रात्रि में मनाया जाता है। वह भी कृष्ण पक्ष की घोर अन्धियारी रात्रि में। भारत वर्ष के प्राय: सभी प्रमुख त्योहार शुक्ल पक्ष में मनाये जाते हैं। कृष्ण पक्ष में केवल तीन त्योहार हैं – शिवरात्रि, जन्माष्टमी तथा दीपावली। ये तीनों त्योहार एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। जन्माष्टमी भी परमात्मा के अवतरण का सूचक त्योहार है। अज्ञान-अन्धकार के समय ज्ञान-सूर्य परमात्मा अवतरित होकर सर्व आत्माओं रूपी दीपकों की बुझी हुई ज्योति जलाते हैं, दीपावली इस ज्ञान-प्रकाश का प्रतीक है।

कुछ लोग शिवरात्रि को परमात्मा का जन्मोत्सव न मानकर विवाहोत्सव मानते हैं। निराकार का विवाह कैसा? निराकार परमात्मा की प्रियतमा भी निराकार आत्मा ही होगी। फिर उनकी एक प्रियतमा कैसे हो सकती है? वे तो प्रेम के सागर हैं। सर्व आत्माओं पर उनकी सम-दृष्टि है। वास्तव में परम प्रियतम एक परमात्मा ही है और सर्व आत्मायें उनकी प्रियतमायें हैं। उस एक साजन की सभी सजनियाँ हैं। उस एक शिव की सभी पार्वतियाँ हैं। उनका अवतरण होता ही सभी आत्मा रूपी पार्वतियों का शृंगार कर वापस मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाने के लिए। जो शरीर भाव से ऊपर उठ अपने को निराकार आत्मा समझ उस निराकार परमात्मा से अपनी सगाई करते हैं, विकारों रूपी कालिमा से अपने को स्वच्छ करते हैं तथा निरन्तर उस पतित पावन परम प्रियतम की याद में रहते हैं, वे ही पावन सतोप्रधान, सर्व गुण सम्पन्न बन इस जीवन में 100% पवित्रता-सुख-शान्ति की प्राप्ति करते हैं तथा भविष्य सतयुगी सृष्टि में नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मीपद को पाते हैं। वे आत्मायें धन्य हैं जो स्वयं निराकार बन निराकार परमात्मा शिव से दिव्य विवाह करती हैं। इस लोकोत्तर, दिव्य, अलौकिक विवाह का ही तो गायन है। इसी स्मृति में शिवरात्रि, परमात्मा शिव की आत्मा रूपी पार्वतियों से विवाहोत्सव के रूप में मनायी जाती है। वास्तव में परमात्मा का जन्मोत्सव और विवाहोत्सव एक ही है क्योंकि उनका अवतरण होता है आत्माओं का शृंगार कर अपने साथ सम्बन्ध जुटाने के लिये।

देवताओं पर सुगन्धित पुष्प चढ़ाया जाता है लेकिन परमात्मा शिव पर आक-धतूरा। कल्पान्त में जब

परमात्मा अवतरित होते हैं, उस समय सर्व आत्मायें विकारों के वशीभूत होकर तमोप्रधान हो जाती हैं। उन्हें फिर से पावन बनाने के लिये पतित-पावन परमात्मा आदेश देते हैं कि मुझ पर काम-क्रोधादि पंच विकारों की बलि चढ़ा दो। इस तरह परमात्मा को पंच विकारों का दान देकर नर-नारी पतित से पावन बन जाते हैं। इसी महान् कृत्य के प्रतीक रूप में परमात्मा शिव पर आक-धतूरा ही चढ़ाया जाता है। भक्ति-मार्ग में बलि या तो शिव पर चढ़ाते हैं या काली पर। देवताओं पर बलि चढ़ाने की प्रथा नहीं है।

शिवरात्रि पर भक्त लोग रात्रि-जागरण करते हैं। ज्ञान-सूर्य परमात्मा आकर अज्ञान-अन्धकार में सोई आत्माओं को जगाते हैं। ज्ञान का प्रकाश फैलाकर माया की मादक नींद में सोई आत्माओं को झकझोरते हैं तथा विकारों से जागरण का आदेश देते हैं। परमपिता परमात्मा की आज्ञाकारी सन्तानें उनके आदेश पर विकारों को त्याग पावन बन, पावन सतोप्रधान सतयुगी दुनिया की मालिक बन जाती हैं। इसी उपलक्ष्य में शिवरात्रि को लोग रात्रि-जागरण करते हैं।

निराकार परमात्मा शिव त्रिमूर्ति हैं। वे ब्रह्मा द्वारा सतोप्रधान दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना कराते, शंकर द्वारा तमोप्रधान असुरी कलियुगी सृष्टि का विनाश कराते तथा विष्णु द्वारा पावन सतयुगी, त्रेतायुगी सृष्टि का पालन कराते हैं। इसलिए उन्हें करन-करावनहार स्वामी के रूप में गाया जाता है। त्रिमूर्ति परमात्मा शिव की दिव्य-जयन्ती पर भक्त-गण उन पर बेलपत्र चढ़ाते हैं जिनमें तीन पत्र होते हैं। लगता है कि प्रकृति ने त्रिमूर्ति परमात्मा की स्मृति में ही तीन पत्तों वाले बेलपत्र की रचना की है।

शिवरात्रि के स्थूल विधि-विधानों में गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य छिपा है जिसे स्वयं परमात्मा शिव अवतरित होकर स्पष्ट कर रहे हैं। आइये, इन आध्यात्मिक रहस्यों को हृदयंगम कर हम भी सच्ची रीति से शिवरात्रि मनायें और स्वयं पावन बन इस देवभूमि भारतवर्ष में पावन रामराज्य की पुनर्स्थापना के महानतम कर्त्तव्य में पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव के पूर्ण सहयोगी बनें। ■■■

हम बनने चले फरिश्ते हैं

■■■ ब्र.कु. निर्विकार श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ

पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।
देह सहित लौकिक दुनिया के, मिटा दिए सब रिश्ते हैं।।

देहभान में आने से माया ने सबक सिखाया है।
अपनी स्वर्ण जंजीरों में कसकर बांध बिठाया है।।
पांच विकारों की चक्की में, सरसों जैसा पिसते हैं।
पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।

द्वापर से दुखी आत्माओं की, पुकार सुन शिव आते हैं।
सारे दुखों से मुक्ति की, संगम पर राह बताते हैं।।
याद करो और चक्र चलाओ, ये ही दोनों रस्ते हैं।
पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।

तीव्र करो पुरुषार्थ स्वर्णिम दुनिया जाओगे।
पुरुषार्थ में कमी रही तो नीची मंजिल पाओगे।।
स्वर्णिम दुनिया में जाने को मानव सभी तरसते हैं।
पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।

परमपिता बच्चों की खातिर स्वर्ग हथेली लाए हैं।
पावन बन यह जन्म दिखाओ, बाबा गले लगाए हैं।।
ज्ञान का सारपरमपिता शिव, ब्रह्मा मुख से बरसाते हैं।
पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।

रूप फरिश्ता रख कर के, तुम्हें अर्श में तो जाना होगा।
आकारी दुनिया में आकर, रूप प्रकट करना होगा।।
फर्श पे आकर कर्म किया फिर उड़े वतन को फरिश्ते हैं।
पुरुषार्थ का लक्ष्य यही, हम बनने चले फरिश्ते हैं।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

प्रश्न- मुरली सुनते आपको कौन-सा नशा चढ़ता है?

उत्तर- मुरली सुनते-सुनते सभी अशरीरी स्थिति का अनुभव कर रहे हो ना। मुरली सुनते मुझे भी ट्रस्टी और विदेही का नशा चढ़ता है तब तो शायद मेरा नाम बाबा ने चेंज नहीं किया है। बाबा हमेशा जनकराज कहके बुलाता था। यह फरिश्तों की सभा है। हरेक का पाँव यहाँ धरती पर नहीं है। फरिश्तों को देखो फिर बाबा को देखो। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा, यह भान बहुत अच्छा है। ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ में है तो योग ऑटोमेटिक लगा हुआ है, उसमें फिर धारणा और सेवा समाई पड़ी है। चारों सबजेक्ट में अटेन्शन रखने से दिल खुश, दिमाग ठण्डा रहे और चेहरा मुस्कराता हुआ रहे। संगमयुग पर बाबा की पहचान मिली है, सारा कल्प नशा चढ़ाने के लिए। मुख्य बात मनमत-परमत से फ्री हैं, श्रीमत सिरमाथे पर है। इशारे से चलने वाले, सदा अडोल-अचल रहने वाले बच्चों को देख बाबा बहुत खुश होता है। संगम पर जो संकल्प करते हैं वो हो जाता है, मेहनत नहीं करनी पड़ती है। योग में बैठते अनुभव होता है कि बाबा सामने देख रहा है। दिल कहता है, ऐसे बाबा को मैं देखती ही रहूँ। बाबा कहे, बच्चों को मैं देखता रहूँ। बाप और बच्चों का यह मिलन दुनिया को साक्षात्कार कराने वाला बड़ा सुन्दर दृश्य है।

प्रश्न- अपने चार्ट में कौन-सी बात विशेष चेक करनी है?

उत्तर- किसी भी प्रकार के दुःख की फीलिंग कभी नहीं आती है, यह चार्ट अपना रखना अच्छा है क्योंकि सारे विश्व की सेवा कराने के लिए बाबा ने कदमों में पदमों की कमाई करना सिखाया है। सारे विश्व में कोई कोना बाबा के परिचय के बिना रह न जाये। जो संकल्प करें वह हो जाए। हर एक की ड्यूटी है बाबा जैसा मीठा बनने की। बाबा ने जो पढ़ाया, सुनाया है वही मन में, चिंतन-मंथन में हो तो व्यर्थ से मुक्त हो जायेंगे। कहा जाता है, भावना का भाड़ा मिलता है। हम खुशनसीब हैं जो सत् बाबा को चैतन्य आत्मा देख रही है। मैं बाबा की हूँ, बाबा कहता है, मैं तेरा हूँ, सबका हूँ। बाबा सबको देखता है, बाबा की दृष्टि बड़ी पॉवरफुल है। बाबा कहता है, बच्चे, जो भोजन बनता है उसे बाबा को रोजाना भोग लगाओ। सतयुग में ऐसे भोग नही लगायेंगे, पर सतयुग में आने के लिए ऐसे गुण धारण करने हैं। यह पढ़ाई बहुत पॉवरफुल है। वही मात-पिता है, वही शिक्षक है, वही सखा और सतगुरु भी है। सभी सम्बन्ध से एक को ही मानते हैं, एक में सब सम्बन्ध है, यह कितना अच्छा है। अन्दर के सच्चे बच्चे जो होते हैं वो दिखावे वाले नहीं होते हैं। बाबा भी ऐसे बच्चों को देख कहेगा, बच्चे की बुद्धि अच्छी है। सारे विश्व को बाबा इमर्ज करता है, यह भासना आप सबको आती है। बाबा सारी सभा को इमर्ज करता है। मैं दिलाराम के दिल में बैठने वाली हूँ। तो सभी अपना यह चार्ट चेक करते होंगे कि सारे दिन में कोई प्रकार का व्यर्थ चिंतन तो नहीं चलता? बाबा आपने जो ऐसा अच्छा पढ़ाया, आपने जो सुनाया, वही मन में, वही चिन्तन, मन्थन में है।

प्रश्न- ज्ञान-चिंतन के साथ और क्या चाहिए?

उत्तर- जब सभी मिल करके एक साथ ओमशान्ति कहते हैं तो वायुमण्डल में एक बाबा दूसरा न कोई का बल बहुत देखने में आता है। साजन के आगे सजनी अलबेली नहीं हो सकती है, बच्चे बाप के आगे अलबेले हो सकते हैं। दीदी का बाबा के साथ सखा रूप में फेवरेट सम्बन्ध था, मुझे भी बाबा के साथ सखा रूप का अनुभव करना सिखाया। यूँ तो बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध रखना बहुत अच्छा है परन्तु सखा के सम्बन्ध का अनुभव करने के लिए बहुत रमणीक स्वभाव चाहिए। रमणीक स्वभाव वाला सखा (बाप) समान नेचुरल नेचर में होगा। बाबा का बनने से बहुत फायदा हुआ है, लाइट हो जाते हैं। चक्र का ज्ञान इशारा देता है कि यहाँ नीचे से जम्प लगाके (लिफ्ट से) ऊपर जाना है। फिर धीरे-धीरे नीचे आना है। अभी सभी चित्रों का ज्ञान क्लीयर है। ज्ञान का चिंतन भी हो और शान्ति में रहने का अभ्यास भी हो।

प्रश्न- प्यारे बाबा ने किस बात पर विशेष अटेन्शन खिंचवाया है?

उत्तर- बाबा ने अटेन्शन खिंचवाया है कि बच्चे बाप को ऐसा याद करो जो थोड़े भी अगर विकर्म बचे हों तो वे विनाश हो जायें। हम ऐसे हल्के बन जायें। बाबा माता-पिता, शिक्षक-सखा, सतगुरु सभी सम्बन्ध में एक ही है। एक बाबा दूसरा न कोई। उसमें फिर यह शरीर भी मेरा नहीं है। ड्रामा की नॉलेज से इतना जानना जरूरी है कि समय बहुत थोड़ा है इसलिए सच्चाई, सफाई, सादगी, प्रेम, शक्ति का नेचुरल अनुभव हो। जितना-जितना हम बाबा के महावाक्यों को दिल में समाते जायेंगे, उतना यह दिल बहुत अच्छा काम करता रहेगा। हमारे पुरुषार्थ में कभी भी अलबेलापन और सुस्ती का नाम-निशान न हो क्योंकि अगर अभी नहीं करेंगे तो कब करेंगे! बाबा ने यह भी कहा है कि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे इसलिए पुरुषार्थ में कोई भी बात की कमी न रहे। चाहिए-चाहिए की इच्छा और उसमें भी जो चीज़ मेरी है उसको कोई हाथ भी न लगाये, यह है ममता। इससे हमें मुक्त बनना है। याद में बैठने के लिए बाबा ने कुछ बातें ऐसी सिखाई हैं जिनका बहुत ध्यान रखना पड़ता है। जो बातें हमारे काम की नहीं हैं वे फिर अपने आप ही चली जाती हैं अर्थात् भूल जाती हैं। काम की बात समय पर भूलती नहीं है क्योंकि रोज़ की मुरली में बाबा बताता है कि तुम्हें क्या करना है। पहले तो संकल्प दृढ़ हो। अभी हम सतयुग में आने के लिए सर्वगुण सम्पन्न अपने को देखें। मेरे में कोई भी गुण की कमी न हो। गुण किसको कहा जाता है और अवगुण किसको कहा जाता है, यह भी पहले पता होना चाहिए।

प्रश्न- प्यारा बाबा हम बच्चों से क्या चाहता है?

उत्तर- बाबा कहता है, बच्चे, तुम साक्षी हो जाओ, मैं साथी बन जाऊँगा। जितना बाबा को याद करो, उतना हाथ और साथ का अनुभव होगा। कोई सिर्फ बाबा-बाबा ही कहता रहे तो वो बेबी बुद्धि है। बाबा ने कहा है, सिर्फ शान्ति में नहीं बैठना है, सर्वशक्तिवान बाप को याद कर शक्ति भी लेनी है। मैं आत्मा हूँ, भले यह अभ्यास हो पर उसमें भी यह स्पष्ट अनुभव हो कि मैं बाबा के नयनों का नूर हूँ, इसे शक्तिशाली याद कहेंगे। बाबा हमारे से क्या चाहता है? बच्चे निर्भय, निर्वैर बनें अर्थात् किससे भी द्वेष भाव नहीं। तो अभी आप अपनी स्थिति ऐसी बनाओ जो बाबा के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। बाबा ने हमको नयनों पर बिठाया है, फिर दिल में बिठाया है। बाबा की दृष्टि बहुत अच्छी है, सतयुग में भी ऐसा मज़ा नहीं आयेगा।

प्रश्न- कहीं भी आँख न डूबे, इसके लिए वृत्ति में क्या हो?

उत्तर- बाबा कहते, बच्चे, तुम अपना मन मेरे में लगा दो। तो मुझे बाबा की यह बात अच्छी लगती है क्योंकि जब हमारा मन बाबा में लग जाता है तो और कोई जगह जाता ही नहीं है। बाबा सिखाता है, समझाता है और प्रैक्टिकल में अनुभव भी कराता है। बाबा का प्यार दिल, दिमाग, संस्कार में दिखाई देता है। सारी दुनिया माया के प्यार के वश है। हमको बाबा ने मायाजीत-जगतजीत बनाया है। मायाजीत होने से अभी ऐसी फीलिंग आ रही है कि पूरा जगत ही हाथों में आ रहा है। बाबा कहते हैं, तुम्हारी त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी की सूरत-मूरत हो। बाबा ने अभी हमारी वृत्ति को त्याग वाला बना दिया है, कहाँ भी आँख नहीं डूबती है। कभी भी न दुःख देना, न दुःख लेना। सभी को शान्ति, प्रेम और रूहानी शक्ति, दृष्टि द्वारा दे करके केयर, शेयर और इन्सपायर कर सकते हैं। ■■■

पत्र सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत मासिक अंक जब आता है तो मैं एक दिन में ही पढ़ लेता हूँ। दिसम्बर, 2019 अंक में ब्र.कु.उर्मिला बहन, शान्तिवन का लेख 'हिम्मत' पढ़ कर मेरे में बहुत हिम्मत आ गई है। मैं पटेलनगर-मोरबी सोसायटी में तीन मास से रहने आया हूँ। बरसात ज्यादा पड़ने से सोसायटी के रोड के दोनों तरफ घास उगकर जंगल-सा बन गया था। मैं सोचता था कि इसको काट दूँ लेकिन मेरे आलस्य और न-हिम्मत के कारण कुछ न हुआ। ज्ञानामृत में 'हिम्मत' लेख पढ़कर दूसरे ही दिन से मैं अकेला घास को काटने लगा। प्रतिदिन चार घंटे के हिसाब से 10 दिन तक काम किया, सोसायटी का सारा घास कट गया और रास्ता साफ हो गया।

दूसरा, जब मैं सोसायटी में रहने आया तो यहाँ हनुमान जी के मंदिर का मैदान समतल नहीं था। मैं सोचता था कि मैं क्या करूँ। 'हिम्मत' लेख में 80/20 का फार्मूला पढ़कर मैंने कुछ करने का ठान लिया। मन्दिर में एक लाख रुपये की बचत थी। सोसायटी के भाई-बहनों ने मिलकर 1.50 लाख रुपये और इकट्ठे कर लिए। इन रुपयों से हमने मैदान में ब्लॉक लगवा दिये। इस काम के लिए मुझे बाबा की प्रेरणा मिली थी। इस सोसायटी में ब्रह्माकुमारीज के बारे में कम लोग जानते हैं। मेरे में अभी हिम्मत आ गई और मैंने अपने फ्लैट की पार्किंग में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला शुरू कर दी है। अभी 25-30 बहनें ज्ञान लेती हैं। यह प्रेरणा ज्ञानामृत का लेख पढ़ कर आई है। मैंने हिम्मत का कदम बढ़ाया तो परमात्मा शिव बाबा ने मेरे में ईश्वरीय बल और आन्तरिक बल भर दिया।

ब्र.कु.कांजीया नरसी मोहन भाई, मोरबी (गुजरात)

ज्ञानामृत पत्रिका का नवम्बर, 2019 अंक का सम्पादकीय लेख 'झूठ और सत्य' काफी अच्छा लगा। 'सच्चे सुख की खोज' तथा 'प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के' भी काफी अच्छे लगे। सबसे बड़ी बात यह है कि यह पत्रिका विज्ञापन रहित है और ज्ञान से भरपूर है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि यह दिन दुगुनी, रात चौगुनी उन्नति करे।

आचार्य डा. सुभाष पुरीरौही, मुख्य सम्पादक धारीवाल दर्पण, गुरदासपुर (पंजाब)

नवम्बर, 2019 में प्रकाशित 'नारी नर्क का द्वार नहीं...' अच्छा लगा। नारी लक्ष्मी स्वरूपा, ममता-मूर्ति, निर्विकार तथा निर्व्यसन-मूर्ति है, यह सत्य है। प्रत्येक प्राणी आत्मा स्वरूप ही है, आत्मीय सम्बन्ध बनाने पर काम विकार समूल नष्ट हो जाता है। पत्रिका का मूल संदेश है कि हम आत्मीय सम्बन्ध बनाएँ ताकि काम-विकार के साथ समस्त अन्य दुर्व्यसनों से भी मुक्त हो सकें। जब काम नहीं तो क्रोध नहीं, क्रोध नहीं तो लोभ भी नहीं। हम सफल राजयोगी बनकर संक्रमित रोगों से बचाव कर सकते हैं। इसमें राजयोग प्रशिक्षण संस्थान का सतत् योगदान है।

डा.रामस्वरूप गुप्त, पूर्व प्रधानाचार्य, मैगलगंज, लखीमपुर-खीरी (उ.प्र.)

ज्ञानामृत का अक्टूबर, 2019 का अंक पढ़ा। उसमें ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन, शान्तिवन का लेख 'जो सोचें वह हो जाए – कैसे?' यह ऐसे प्रस्तुत किया है मानो बाबा के ज्ञान की घुट्टी यानि बादाम, जायफल आदि घिसकर, दूध में घोलकर छह मास के बच्चे को पिलाया गया है। बहनजी आप लिखती रहो, हमें अच्छा लगता है।

ब्र.कु.रामचन्द्र ब.पवार, पलुस (महाराष्ट्र)

अध्यात्म और ज्योतिष

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

अध्यात्म का अर्थ है स्वयं को अर्थात् जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश के आवरण से ढकी मानवीय चेतना और उसके मूल स्वभाव (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति) को जानना। इस मूल चेतना के ज्ञान को ही तीसरा नेत्र खुलना कहा जाता है। मान लीजिए, एक गाँव में ऐसे लोग हैं जिनकी आँखों पर पट्टी बंधी है। जीवनोपयोगी काम तो वे करते हैं परन्तु धीरे-धीरे करते हैं, भय के साथ करते हैं, कई गलतियाँ भी कर देते हैं, गलतियों के लिए पश्चाताप भी करते हैं, दूसरों को दोषी भी ठहराते हैं और भाग्य को भी कोसते हैं। उनमें से कोई एक समझदार व्यक्ति अपनी पट्टी कहीं से उतरवाकर आता है और उन सभी को बताता है कि देखो, पट्टी उतरवाने से कार्य जल्दी होते हैं, सही होते हैं, तुम भी उतरवा लो। यह सुनकर वे पट्टीधारी कहते हैं कि पट्टी उतरवाने की ना तो हमें आवश्यकता महसूस हो रही है और ना ही इस काम के लिए हमारे पास समय है। वह व्यक्ति उन्हें समझाता है कि काम धीरे करने में तुम्हारा जो समय व्यर्थ जाता है वह पट्टी उतरवाने से बचेगा, काम जल्दी और अच्छे होंगे परन्तु उन्हें यह बात समझ में नहीं आती और वे जैसे हैं, वैसे ही चलते रहते हैं।

आज के संसार में भी अधिकतम लोग देह के अभिमान की तथा देह से जुड़ी गलत मान्यताओं की पट्टी बांधकर जी रहे हैं। उन्हें पट्टी उतरवाने की बिल्कुल जरूरत महसूस नहीं हो रही। वे समस्याओं से जूझते हुए और उनके वशीभूत होते हुए जीवन जीने को मजबूर हैं परन्तु पट्टी उतरवाने को तैयार नहीं हैं। पट्टी उतरवाना अर्थात् अपने विशुद्ध आत्मिक रूप में टिकना जिसे ही अध्यात्म कहा जाता है।

आन्तरिक और बाह्य आचरण

माथे पर चंदन लगा लेना, भगवे वस्त्र धारण कर लेना, खड़ाऊ पहन लेना, गले में माला डाल लेना, सुबह उठकर पूजा-पाठ कर लेना, कमल का फूल पानी में डुबोकर सबको लगा देना – ये सब बाह्य आचरण हैं। अध्यात्म आन्तरिक आचरण है। अन्दर में विराजमान आत्मा की स्मृति में टिककर उसके मूल गुणों की चंदनमय खुशबू संसार में फैलाना आन्तरिक आचरण है। भगवे वस्त्र पहन लेना बाह्य आचरण है परन्तु भगवा वस्त्र जिस त्याग-वैराग्य का प्रतीक है, उस त्याग और वैराग्य को प्रतिपल मन में धारण किए रखना आन्तरिक आचरण है। खड़ाऊ पहनना बाह्य आचरण है परन्तु इच्छा-आसक्ति-पसन्द-चाहना आदि से मन को उखाड़कर ईश्वर में रोपित कर देना आन्तरिक आचरण है। गले में माला डाल लेना बाह्य आचरण है परन्तु ईश्वरीय गुणों की माला द्वारा अपने चरित्र को सजा लेना, उसके गुणों से मालामाल रहना और दूसरों को भी यह ईश्वरीय माल प्रदान करना आन्तरिक आचरण है। पूजा-पाठ करना बाह्य आचरण है परन्तु चेतना, परमचेतना में समाई ही रहे, कर्म करते भी उसके ज्ञान, गुण, शक्तियों का रसास्वादन करती ही रहे, यह आन्तरिक आचरण है। कमल फूल दूसरों को लगाना बाह्य आचरण है परन्तु संसार की बुराइयों रूपी कीचड़ से स्वयं को न्यारा

बनाकर, दूसरों को भी ऐसा बनने की प्रेरणा देना आन्तरिक आचरण है।

सभी गुणों का खजाना आत्मा में है

यह शरीर एक मकान है तो आत्मा मकान के भीतर रखी छोटी अटैची (Briefcase) की तरह है। सारा जेवर इस अटैची में है अर्थात् सभी गुणों का खजाना आत्मा में भरा है। हम मकान को सजाने की चिन्ता में, मेहनत में, पुरुषार्थ में लगे रहेंगे तो अटैची में पड़े जेवरों का इस्तेमाल कब करेंगे, कैसे करेंगे। अत: बाह्य आचरण को समेटकर अन्दर आत्मा की ओर मुड़ना ही अध्यात्म है। इससे परमात्मा से ध्यान स्वत: लग जाएगा क्योंकि कहा जाता है, आत्मचेतना ही परमात्म-चेतना की ओर अग्रसर करती है (Soul conscious leads to God conscious)।

अध्यात्म और ज्योतिष में अन्तर

आध्यात्मिकता और ज्योतिष में फर्क इतना ही है कि आध्यात्मिकता हमें खुद को बदलने की, आत्म-परिवर्तन करने की प्रेरणा देती है इसलिए इसका नारा है, 'खुद को बदलो, जग बदलेगा', 'स्वपरिवर्तन से होगा विश्व परिवर्तन'। इसके द्वारा हम अपने अंदर झाँकना सीखते हैं, इससे जीवन के जटिल सवालों के जवाब मिल जाते हैं और जीवन को सही तरीके से देखना और जीना आ जाता है। इसकी भेंट में ज्योतिष विद्या, आने वाले कुछ पलों की थोड़ी-सी आहट जरूर देती है परंतु परिस्थितियों को परिवर्तन करने के बाहरी इलाज बताती है। इन बाहरी इलाजों के सहयोग से हम स्वयं पर थोड़ी मेहनत करते हैं परन्तु व्यक्ति या समस्याओं को बदलने का प्रयास ज्यादा करते हैं। इस प्रयास में कभी निराशा का और असफलता का भी अनुभव होता है।

मान लीजिए, हम अपनी शारीरिक जाँच रिपोर्ट लेकर एक डॉक्टर के पास गए। उसने रिपोर्ट देखी और साथ ही हमसे हमारी जीवनशैली भी पूछी। दोनों की जानकारी पा लेने के बाद उस अनुभवी डॉक्टर ने कहा कि आने वाले समय में आपको हृदयरोग होने की सम्भावना है। डॉक्टर की बात सुनकर हमारे मन में दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। एक, हम भयभीत हो जाएँ, अपने परिवार के पूर्वजों को याद करके कि मेरी माँ को भी, नानी को भी हृदयरोग था तो मुझे भी होना ही था। फिर हमें अपनी जीवन शैली स्मृति में आई कि हमें तनाव भी बहुत है, प्रात:कालीन सैर का भी वक्त नहीं मिलता है, भोजन भी अनुपयुक्त है। इस प्रकार की चिन्ता हमें जल्दी ही इस रोग के घेरे में ला सकती है। तब हमारे मुख से निकलेगा, डॉक्टर ने जो कहा था, सत्य हो गया।

दूसरी प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि डॉक्टर द्वारा चेतावनी पाकर हम सावधान हो जाएँ। जल्दबाजी, तनाव, फास्टफूड आदि का परित्याग कर प्रात:कालीन सैर प्रारम्भ कर दें। खुश रहने की आदत डाल लें। राजयोग और शारीरिक योग करके तन को दुरुस्त और मन के विचारों में एकाग्रता, सात्विकता, पवित्रता ले आएँ। इससे हमारा स्वास्थ्य सुधरता जाएगा और हम हृदयरोग से बच सकेंगे।

सम्भावना को निरस्त करना या सत्य बनाना हमारे हाथ में

जैसे डॉक्टर ने वर्तमान शारीरिक स्थिति और दिनचर्या को देखकर, भविष्य में शरीर को क्या हो सकता है, उसकी सम्भावना जताई, उसी प्रकार, एक ज्योतिषी भी ग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति के अनुसार आने वाले 6 मास या एक साल में क्या घटने वाला है, उसकी सम्भावना बताता है। वह कहता है, हो सकता है, आपके धन्धे में नुकसान हो, आपकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़े, कोई आपसे पुरानी दुश्मनी निकालने का प्रयास करे आदि-आदि। यह केवल सम्भावना बताई गई है, सत्य नहीं। हम उन ज्योतिषी के शुक्रगुजार हैं परन्तु इस सम्भावना को निरस्त करना या सत्य बनाना हमारे हाथ में है, कैसे? जैसे हृदयरोग की बात सुनने के बाद, दूसरी प्रतिक्रिया के रूप में हमने उसे एक चेतावनी के रूप में लिया, उसे स्वीकारा नहीं वरन् सावधान हो गए। अपनी जीवनशैली को सुधार कर संभावना को निरस्त कर

दिया। इसी प्रकार, यहाँ भी हम अपने धंधे के प्रति, सेहत के प्रति अधिक सचेत होकर और यदि कोई पुराना हिसाब-किताब है तो उसे शुभभावना, शुभकामना द्वारा सैटल कर,ज्योतिषी द्वारा बताई गई सम्भावना को निरस्त कर सकते हैं। परन्तु, अधिकतर मामलों में होता क्या है कि हम सम्भावना को ही सत्य मान लेते हैं। हमें निश्चय हो जाता है कि ऐसे तो होगा ही क्योंकि उस क्षेत्र के जानकार ने कहा है। फिर हमें वो लोग याद आने लगते हैं जिनके प्रति उसकी भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध हुई हैंऔर यद् ध्यायति तद् भवति के अनुसार वह बात सिद्ध हो जाती है।

जो बात बार-बार सोची जाती है, वह हो जाती है

बताते हैं कि एक बार, एक विदेशी भारत में आया, एक ज्योतिषी से मिला और पूछा, मेरी मृत्यु कब होगी? ज्योतिषी ने ग्रह, नक्षत्र आदि देखकर बता दिया कि तीन मास बाद ही आपकी मृत्यु होने की सम्भावना है। उसने उसको सच मान लिया। वह अपने देश वापस लौटा, दिन-रात मृत्यु की उस घड़ी के बारे में ही सोचता रहा और जैसे-जैसे समय नजदीक आता गया, अपने कारोबार को समेटता गया। जैसे ही वह सम्भावित समय आया, उसने शरीर छोड़ दिया। यदि उसने ना सुना होता, ना सोचा होता तो यह न हुआ होता इसलिए कहा जाता है, ज्योतिषी केवल सम्भावना व्यक्त करते हैं, उस सम्भावना को स्वीकारना या नकारना हमारे हाथ में है। परन्तु होता यह है कि ज्योतिषी के कहते ही वह बात हमारे अवचेतन मन में समा जाती है। अवचेतन मन उस पर काम करना शुरू कर देता है। हमारी सोच प्रकृति में जाती है। प्रकृति में मौजूद उसी प्रकार के विचार हमारे इन विचारों से मिल जाते हैं। दोनों का मेल होने के बाद सारी कायनात उस संकल्प को साकार करने में लग जाती है। इसलिए कहा जाता है कि जो बात जितनी घनिष्ठता से बार-बार सोची जाती है, वो हो जाती है।

भविष्य को न जानना ही अच्छा है

अत: भविष्य को पहले से ही जानने की मेहनत न की जाए तो अच्छा है। कई लोगों की धारणा होती है कि भविष्य को पहले से ही जान लेने से हमारे कई काम सरल हो जाएँगे, हम सावधान हो जायेंगे परन्तु कई बार उल्टा हो जाता है अर्थात् सरल होने के बजाए काम मुश्किल हो जाते हैं, कैसे? जैसे मान लीजिए, किसी ज्योतिषी ने हमारा हाथ देखकर कहा कि अगले 6 मास आप पर भारी हैं, कोर्य की सफलता में अड़चनें आएँगी आदि-आदि। अगर हमें इस बात की जानकारी न रहती या हम इस जानकारी में विश्वास न करते तो अपनी पूरी ऊर्जा लगाकर अपना कारोबार करते परन्तु यह जानकारी पा लेने के बाद तो मन में विचार आने लगे कि मेहनत करने से क्या फायदा, सफलता तो होनी नहीं है। इस प्रकार, *इस जानकारी ने कार्य के प्रति हमारे उमंग को खत्म कर* दिया। उमंग नहीं तो जीवन में कुछ भी नहीं। जहाँ उमंग है वहाँ धूल भी धन हो जाता है और बिना उमंग, धन भी धूल हो जाता है।

अपनी समस्या के समाधान के लिए हमें कई बार कोई खास रंग, पत्थर या रत्न आदि पहनने को कहा जाता है। इनसे कोई हमारे ग्रह-नक्षत्रों की चाल नहीं बदल जाती परन्तु इनके सहयोग से हम अपनी सोच अवश्य बदल लेते हैं। जब हमें बताया जाता है कि अगले छह मास हम पर भारी हैं तो हमारी हिम्मत टूट जाती है। फिर हमें बताया जाता है कि अमुक पत्थर या रंग धारण करने से बाधा टल जाएगी। इस प्रकार, अमुक वस्तु को धारण कर हमारा मन आशावादी हो उठता है कि भले कितनी भी बाधाएँ आएँ, मुझे सफल होना ही है क्योंकि मेरे पास सफल होने का साधन है। मेरे पास अमुक नग है, मोती है, इससे ग्रह-नक्षत्रों की दशा जरूर टलेगी। खास रंग, पत्थर या रत्न आदि पहनने से मन को सकारात्मक होने का सहयोग मिलता है।

ज्योतिष विद्या के सम्बन्ध में ज्ञानामृत के पूर्व मुख्य सम्पादक भ्राता जगदीश जी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है 'कि ज्योतिष और हस्तरेखा के कुचक्र में पड़े रहने वाले व्यक्ति वहमी-से बन जाते हैं और अपने

मनोबल को क्षीण कर बैठते हैं। भविष्य के भय से वे पहले ही चिन्तित और भयभीत हुए रहते हैं।'

'कुछ देर के लिए मान भी लें कि प्राचीन काल में ऐसे मेधावी भविष्य-वक्ता होते थे जो ठीक-ठीक ही भविष्य-वर्णन कर सकते थे, तो भी यह तो सर्वमान्य है कि वे भी भावी को टाल नहीं सकते थे। यदि वे भावी को भी टाल सकते होते तब तो विश्व के वृत्तान्त ही कुछ और होते और द्वापरयुग समाप्त होकर कलियुग न आता। प्राचीन ग्रंथों में ऐसे कई आख्यान मिलते हैं जिनमें यह उल्लेख है कि अमुक ऋषि ने अमुक वृत्तान्त को होने से रोक लिया और उसकी बजाय फलाँ वृत्तान्त हुआ। इससे लगता तो ऐसा ही है कि उन्होंने 'होनी' को 'अनहोनी' कर दिया और 'अनहोनी' को 'होनी' में बदल दिया। परन्तु, इसकी बजाय ऐसा क्यों न माना जाये कि 'होनी' या 'भावी' वास्तव में वही थी जो अन्त में हुई और बीच में उस ऋषि या मुनि ने जो यन्त्र, तन्त्र का या यज्ञ, पाठ, पूजा का प्रयोग किया, उसके बाद होना वही था जो अब हुआ। अत: वे तो स्वयं ही 'होनी' अथवा 'भावी' के अधीन होकर कर्म कर रहे थे। विश्व के सभी वृत्तान्त एक-दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं कि एक को बदलने के लिए सभी को बदलना जरूरी है। सभी वृत्तान्तों को बदलना तो सभी के कर्मों के लेखे से जुड़ा हुआ है और उनमें हस्तक्षेप करना तो मनुष्य के अधिकार-क्षेत्र और उसकी शक्ति से बाहर का कार्य है। इस सत्यता पर आधारित यह सत्यता भी सिद्ध है कि विश्व के वृतान्त पूव-निश्चित हैं। यदि वे पूर्व-निश्चित न हों तब न तो 'भाग्य' की चर्चा हो सकेगी, न भविष्य-कथन ही की बात हो सकेगी। इस विषय में भारत के प्रसिद्ध खगोल शास्त्री और ज्योतिषाचार्य वाराहमिहिर के बारे में प्रसिद्ध है कि कैसे उसने अपनी पुत्री लीलावती के विवाह का जो मुहूर्त्त निकाला था, उसमें विघ्न पड़ा जिसके विषय में वाराहमिहिर ने सोचा भी नहीं था।'

परमात्मा पिता ही परमज्योतिषाचार्य

परमपिता परमात्मा शिव, परमसत्य ज्योतिषाचार्य हैं, वे त्रिकालदर्शी और त्रिनेत्री हैं, कालचक्र के द्रष्टा तथा साक्षी हैं और जन्म-मरण से अतीत हैं। वे भाग्य-रेखा अथवा तकदीर की लकीर लिखने वाले हैं क्योंकि वे जो सत्य ज्ञान देते हैं, योग सिखलाते हैं, दिव्य गुणों की धारणा का प्रशिक्षण देते हैं तथा संस्कार-शुद्धि एवं व्यवहार-शुद्धि करने का पुरुषार्थ सिखाते हैं, उससे ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण होता है।

ज्योतिषी भी मुहूर्त्त, वेला, लग्न, राशि इत्यादि देखते हैं और शनि, मंगल, बुध, बृहसति इत्यादि की दृष्टि, योग, दशा तथा कौन किसके घर में है, इन बातों पर विचार करके व्यक्ति का भविष्य-फल बताते हैं। हमारा तो जन्म ही संगमयुग जैसे अत्यन्त शुभ युग में, जिसे कि 'पुरुषोत्तम युग' भी कहा जाता है, में हुआ है। इस युग में ही ज्ञान रूपी अमृत मिलता है; इसलिए यह सारा युग ही 'अमृतवेला' अथवा 'ब्रह्ममुहूर्त्त' है, जो कि सबसे श्रेष्ठ है। हमारी लग्न तो स्वयं परमपिता परमात्मा से है, योग भी सहज राजयोग है, भगवान की हम पर कृपा दृष्टि है, बृहस्पति की दशा है, राशि सभी से मिलती है क्योंकि हमारा किसी से झगड़ा नहीं है। अत: हमारा भाग्य तो निश्चय ही श्रेष्ठ है।

आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम परमात्मा के द्वारा किये गये भविष्य-कथन में निश्चयबुद्धि रहें, उन द्वारा बतायी गयी मर्यादाओं, नियमों इत्यादि का उल्लंघन न करें। ■■■

ब्रह्मचर्य एक कठिन साधना या आनन्द की यात्रा

ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (म.प्र.)

ब्रह्मचर्य – महान शक्ति, महान आदर्श, महान धारणा, सभी दु:ख और दुर्बलताओं से मुक्ति का द्वार एवं मानव कल्याण का अचूक साधन है किन्तु इसका नाम सुनते ही मन में पहला विचार यह उठता है कि उफ! इतना कठोर व्रत, यह तो साधारण मनुष्यों के बस की बात ही नहीं है, हमारे लिए तो इसकी चर्चा ही व्यर्थ है। इस प्रथम विचार के साथ ही मनुष्य का एक महान सौभाग्य से किनारा हो जाता है और वह फिर से मुड़ जाता है, विकारों के वशीभूत सड़-गल चुकी उसी जर्जर जीवन पद्धति की ओर। तो आइये, करते हैं एक निष्पक्ष समीक्षा ब्रह्मचर्य की वास्तविकता की और जनमानस की मान्यताओं की, जो हमें भ्रांतियों से मुक्त कर सके।

विकारों रूपी बला के छूटने में ही कल्याण

जीवन, परमात्मा और प्रकृति की अनुपम देन है। यह हमें सुख और आनंद की प्राप्तियों के लिए मिला है। इसमें सुखद अनुभवों का लेखा-जोखा रखने योग्य है और छोड़ने योग्य वे बातें होती हैं जो सुखों को नष्ट करती हैं, दुखों को पैदा करती हैं। ऐसी बातें ही विकार अथवा अवगुण कहलाती हैं। तो इन बुराइयों को छोड़ना, कोई छोड़ना नहीं है बल्कि बलाओं से छूटना है वरना ये बलायें हमें कहीं का नहीं छोड़ेंगी। ध्यान देने योग्य बात यह है कि बलाओं से छूटा जाता है, न कि उन्हें छोड़ा जाता है इसलिए कहावत है 'भला हुआ जो बला छूटी।' कभी यह नहीं कहा जाता है कि हमने बला छोड़ी। जैसे कोई टी.बी. का रोगी कभी यह नहीं कहेगा कि मैंने टी.बी. रोग को छोड़ा बल्कि यही कहेगा कि बड़ी मुश्किल से इस रोग से पीछा छूटा। इसी प्रकार वासनायें, तृष्णायें, स्वार्थ आदि आत्मा के महारोग हैं जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष आदि के रूप में प्रगट होते हैं। इनसे मानव सहित समस्त प्राणी जगत को आदि-मध्य-अंत कठोर दु:ख भोगने पड़ रहे हैं। इन में से नम्बरवन महारोग है काम-वासना, जिसने कई स्थितियों में तो आज के मानव को दानव या गंदगी का कीड़ा बना देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह वो विकार है जो मनुष्यात्माओं के मन में सर्वाधिक भोगने की लालसाओं को जन्म देता है। ये लालसाएँ ही मानव की स्वार्थ की धारणाओं को अति प्रबल बनाती हैं। स्वार्थ में ही मनुष्य सबसे ज्यादा नीचे गिरता है। वासनापूर्ति के स्वार्थ में आज तक जितने निकृष्टतम अपराध समाज में देखे गए हैं उतने अन्य किसी भी मनोविकार के वशीभूत नहीं देखे गए। मानव मानसिकता की इतनी घटिया वृत्ति के त्याग को यदि कुछ छोड़ना कहा जाये, तो यह नासमझी ही है।

यह परिवर्तन तो एक श्राप जैसे मनोविकार से छूट कर सद्गति की ओर बढ़ने का पहला कदम है।

अविनाशी प्राप्तियों में तल्लीन रहना ही सच्चा वैराग्य

ब्रह्मचर्य मात्र वासना को छोड़ने का नाम है या किसी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति की यात्रा है? यह कठोर साधना है या सर्वश्रेष्ठ आनंद? इन बातों के विश्लेषण से ही हम ब्रह्मचर्य की वास्तविक छवि का दर्शन कर सकेंगे। आज तक मानव समाज में वैराग्य की एक बहुत नीरस और रूखी-सूखी परिभाषा प्रस्तुत की गई है। इसके अनुसार, सभी आशाओं को छोड़ देना और परिवार-संसार-पदार्थ आदि को असार मानकर शांति की तलाश में दुनिया से मुँह फेरना ही वैराग्य है। परन्तु, वैराग्य का सही अर्थ तो तुच्छ और क्षणिक प्रलोभनों के स्थान पर वास्तविक एवं श्रेष्ठ-स्थायी सुखों में रम जाना है। सरल अर्थ में, संसार में रहते भी विनाशी प्राप्तियों के आकर्षणों से परे रहकर मूल्यनिष्ठ शाश्वत सतोप्रधान प्राप्तियों के अनुभव में तल्लीन रहना ही वैराग का सच्चा स्वरूप है। इसी तरह ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ वासनाओं को दबाकर रखना नहीं है या किसी पाप अथवा ग्लानि के भय से वासनाओं को बलपूर्वक रोक लेना भी ब्रह्मचर्य नहीं है। ये प्रयास तो मन के दमन व मन पर बोझ लेकर चलने की प्रक्रिया है। दमन और बोझ की यह प्रक्रिया कई बार आवेगों के बांध तोड़ कर फूट पड़ने की स्थितियों को जन्म देती है। यह कोई सच्ची सफलता या तप नहीं हुआ। यह तो भारी दबाव में जीना हुआ। ब्रह्मचर्य से वास्तविक अभिप्राय यह है कि जो क्षणिक सुख-आनंद आत्मा दैहिक भोग और आकर्षणों में डूबकर अनुभव करना चाहती है, उसकी भेंट में, स्थाई आनंद, आनन्द के सच्चे स्रोत से जुड़कर प्राप्त करे। इससे आश्चर्यजनक ढंग से आत्मा अपने निज स्वरूप में बदलाव देखेगी और सर्वश्रेष्ठ सुख और मुक्त मानसिक अवस्था के उच्च अनुभवों में डूबने लगेगी।

ब्रह्मचर्य के कुछ महान आध्यात्मिक अभिप्रायों पर हम दृष्टिपात करते हैं –

(1) आत्मा ब्रह्मदेश अथवा परमधाम की रहने वाली है जिसे आत्माओं की निराकारी दुनिया, परलोक, शांतिधाम या निर्वाणधाम आदि नामों से जाना जाता है। आकाश तत्व से पार यह धाम (स्थान) लाल-सुनहरी दिव्य आभा लिए हुए प्रकाश से भरा हुआ है। इस तेजोमय ऊर्जा रूपी सूक्ष्म तत्व को ब्रह्म महातत्व कहा जाता है जहाँ गहनतम शांति के प्रकम्पनों के बीच आत्मा अपनी मूल प्रकाशमय ज्योतिर्बिंदु स्थिति में चैतन्य सितारे की तरह रहती है। वहाँ आत्मा अशरीरी एवं मूल बीजरूप अवस्था की सम्पूर्ण पवित्र स्थिति में होती है और फिर कालचक्र में अपने निश्चित समय पर, साकार सृष्टि रंगमंच पर पार्ट अदा करने के लिए अवतरित होती है। सृष्टि रंगमंच पर अवतरित होकर, साकार देह द्वारा कर्म करते हुए भी आत्मा जब अपने ब्रह्मदेश की पवित्रता, शांति एवं अलौकिकता से पूर्ण मन:स्थिति में रहते हुए चर्या अर्थात् आचरण करती है तो उस आदर्श आचरण को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। आत्मा जब पवित्रता एवं शांति स्वधर्म में स्थित रहकर ब्रह्मलोक की बंधनमुक्त स्थिति का अनुभव, कर्मक्षेत्र पर भी करती रहती है तो उसका यह आचरण ब्रह्मचर्य है। इसमें आत्मा कोई दूसरी चीज नहीं अपना रही है, और न ही कोई दमनकारी त्याग या परिवर्तन कर रही है बल्कि अपने स्वाभाविक अनादि स्वधर्म का पालन कर एक दिव्य आनंदमय जीवन ही जी रही है।

(2) श्रेष्ठ आध्यात्मिक पुरुषार्थियों एवं मनीषियों द्वारा ब्रह्मचर्य की व्याख्या में कहा गया है कि आत्मा के सुख को भोगना ही ब्रह्मचर्य है जिसका अर्थ है कि मनुष्य की आत्मा, देह में रहते हुए, दैहिक आसक्तियों को भोगने के बजाय आत्मा में निहित प्रेम, शान्ति, अहिंसा, ज्ञान, शक्ति एवं रचनाशीलता रूपी सद्गुणों की अनुभूति वाला जीवन जीए। इस जीवनशैली को ही ब्रह्मचर्य कहा जाता है। यहाँ भी ब्रह्मचर्य का अर्थ कोई सुखों का त्याग

करने का नहीं है लेकिन विनाशी-क्षणिक भौतिक सुखों की जगह आत्मा में निहित गुणों व कलाओं के अनुभवों से समृद्ध, स्थायी सुखमय जीवन जीने से है। इसके अंतर्गत आत्मा द्वारा अपने शरीर का पूरा ध्यान रखना, उसे स्वस्थ, स्वच्छ एवं व्यवस्थित रखना, एक स्वाभाविक उत्तरदायित्व के रूप में आता है। इसमें शारीरिक दमन का कोई प्रश्न ही नहीं है।

(3) आत्मा अपनी रचनात्मकता के गुण द्वारा सुन्दर संसार को रचने की योग्यता रखती है और परमात्मा शिव आत्माओं की इसी योग्यता के विकास द्वारा सर्वश्रेष्ठ संसार की रचना करते हैं जिसमें सर्वप्रथम व सर्वोपरि निमित्त प्रजापिता ब्रह्मा बनते हैं। वे संपूर्ण पवित्रता और दिव्यता का पालन करते हुए – कर्म करने की कला, व्यवहार कला, पालना करने व सीखने-सिखाने की कला, नेतृत्व कला, निर्माण करने की कला आदि समस्त रचनात्मक कलाओं में सम्पूर्ण बनकर समूचे विश्व के आगे उच्चतम उदाहरण बनते हैं। तो परमात्मा के कार्य में निमित बनी महानतम व सर्वश्रेष्ठ आत्मा प्रजापिता ब्रह्मा के कदमों पर कदम रखना अर्थात् उनके आदर्शों का मन, वचन, कर्म से अनुकरण करना भी ब्रह्माचारी सो ब्रह्मचारी बनना है जिससे हम आत्माएं सुखमय संसार के निर्माण में रचनात्मकता का योगदान देकर अपना स्वर्णिम भाग्य बना सकें।

इस प्रकार, तुच्छ विकारी वृत्तियों से लगाव नष्ट करके आत्मा में निहित सर्व सद्‌गुणों के विकास द्वारा सर्व कलाओं व योग्यताओं में परिपूर्ण बनने की महान यात्रा है ब्रह्मचर्य। यह स्वयं के निर्माण का कर्त्तव्य है। आत्मा में निहित संगीत, काव्य एवं सामर्थ्य के अनुभवों के आनंद की यह यात्रा है। इसमें त्याग जैसा कोई शब्द ही नहीं है बल्कि

आध्यात्मिक जीवन को चुनने वाली सभी आत्माओं के प्रति परमात्मा शिव पिता का यही महान सन्देश है कि ब्रह्मचारी अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् सौभाग्यशाली सो स्वर्णिम युग के अधिकारी बनो। सच्चे अलौकिक आनंद-पथ के यात्री बनो, पूर्वाग्रह अथवा भ्रांतियों के पथ के यात्री नहीं। इसके लिए उनका सभी बच्चों को वरदान है कि बच्चे, 'पवित्र भव, योगी भव।' ■■■

नहीं अब सतयुग दूर

■■■ ब्रह्माकुमार राजेन्द्र भाई, एटा (उ.प्र.)

नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?
नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ये पाँच विकार हटाओ।
ये माया के पैगम्बर हैं, इनको धूल चटाओ।।
गये तुम शिव को भूल, ओढ़ चदरिया सो गये।
नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?

क्षणिक सुखों का भंवर जाल है, उसमें क्यों भरमाया?
स्वार्थ वाले इंसानों ने नोच-नोच कर खाया।
छोड़ शिव हाजिर हुजूर, किन ख्वाबों में खो गये?
नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?

पारसनाथ एक शिव बाबा, पारस हमें बनाता।
ज्ञानी वह जो तूफानों में तोहफा लेकर आता।।
बनें वे सिरताज जरूर, जो दाग पाप के धो गये।
नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?

परमपिता शिव शिक्षक, सद्‌गुरु छोड़ ज्ञान क्यों खोवे?
धर्मराज की मार पड़े तब सुबक-सुबक कर रोवे।।
कहाँ गया तेरा गुरूर, सपने धूमिल हो गये।
नहीं अब सतयुग दूर, क्यों अलबेले हो गये?

गुस्से का समाधान

■■■ ब्रह्माकुमारी डॉ.कुमकुम मेहरोत्रा, मुरादाबाद

अधिकांश लोगों में यह मान्यता है कि गुस्सा स्वाभाविक है। अक्सर घरों में देखा जाता है कि किसी न किसी व्यक्ति का स्वभाव-संस्कार गुस्सैल होता है। लोग सोचते हैं कि गुस्से से दूसरों से अपनी बात मनवा सकते हैं, किसी को कुछ भी सिखा सकते हैं परन्तु हकीकत ऐसी नहीं है। गुस्सा केवल शान्ति की कमी है। इस कमी को मिटाया जा सकता है। निम्नलिखित परिस्थितियों पर ध्यान दीजिये –

- गृहिणी यदि काम वाली बाई से कुछ कहे और वो पलट कर जवाब दे दे।

समाधान – उसके मुँह न लगें और उस स्थान से हट जायें। अपने ऊपर संयम रखने के लिए ईश्वरीय याद न भूलें। थोड़े दिनों बाद काम वाली बाई का स्वभाव शान्त स्वरूप हो जायेगा।

- जब मरीज कहे, डॉक्टर साहब, यह क्या लिख दिया, इससे तो मैं और बीमार हो गई, उल्टा असर हो गया।

समाधान – थोड़ा मुस्करायें और कहें, 'देखो बीबी, कोई भी डॉक्टर, मरीज का बुरा नहीं चाह सकता। वह खुदा का बन्दा है। हर आत्मा के शरीर में दवा अलग तरह से प्रतिक्रिया करती है व कुछ दवाइयाँ अलर्जिक प्रतिक्रिया करती हैं जिनके बारे में पहले से अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता।'

- जब कोई घर का व्यक्ति कहे, अरे, ये क्या कर दिया?

समाधान – उसे सफाई न दें बल्कि मन में जाँच-परख करें। यदि गलती है तो केवल सॉरी काफी है। यदि गलती नहीं है तो मन में सोच लें – उनका और मेरा कार्य करने का तरीका अलग-अलग है, दोनों सही हैं।

- जब खाना बनाने वाली से दाल तली में लग जाये, नमक डालना भूल जाये, दूध उफन कर गिर जाये या प्याला टूट जाये।

समाधान– गुस्से से कुछ भी ठीक नहीं होगा। भूल हमसे भी हो सकती है। अपने सहयोगियों को अपने ही समान आत्मा समझें।

- किसी संगठन में यह बिल्कुल न सोचें कि फलाने व्यक्ति ने आकर मुझसे हाथ नहीं मिलाया, नमस्कार या अभिवादन नहीं किया। इज्जत स्वयं द्वारा स्वयं को दी जाने वाली चीज है, ना कि शरीरधारियों द्वारा मिलने की वस्तु।
- किसी ने हमारे ऊपर लांछन लगा दिया।

समाधान – ऐसे में चुप रह पाना मुश्किल जरूर है पर नामुमकिन नहीं है। दूसरों के प्रति रहम भाव रखने से खुशी हमें ही मिलेगी। बस, सोच लें कि अमुक आत्मा अपने स्वभाव के परवश है।

- घर में बच्चे तेज बोलें तो क्या करें?

समाधान – बच्चों का गुस्सा पी जायें। उन्हें गुस्सा शान्त करने की शुभभावनाएँ दें और उनके द्वारा कही किसी बात को दिल से न लगायें। तुलनात्मक वाक्यों का इस्तेमाल न करें।

- पति यदि गुस्सैल है तो पत्नी की सहनशीलता और सन्तोषी स्वभाव विकसित होता है। धीरे-धीरे वह पत्नी के गुणों का कायल हो जाता है और उसमें मधुर परिवर्तन आ ही जाता है।
- 'मैं क्यों करूँ जब घर में काम वाली लगी हुई है' ये विचारधारा अक्सर अपेक्षायें बढ़ाती है और अत्यधिक उम्मीद वाला बनना अन्तत: कष्टदायक होता है।
- क्रोध के अन्दरुनी कारण – (क) ईर्ष्या – दूसरों के ऊपर उठने से कभी-कभी यह भावना आती है कि हम वहाँ क्यों नहीं हैं? (ख) बदले की भावना मन में तमाम बीमारियों की जड़ होती है। (ग) अहंकार – हम किसी से कम नहीं, यह भावना देहअभिमानी बनाती है। (घ) घृणा – यदि हम सबको आत्मा समझेंगे तो घृणा का भाव नहीं आयेगा। (ङ) स्वयं को बात-बात पर दोषी ठहराना। इसकी दवा है राजयोग। (च) उम्मीद – यह सबसे बड़ा कारण है आन्तरिक क्रोध का। (छ) शक – यह एक कीड़ा है, जो इन्सान को अन्दर तक खोखला कर देता है। (ज) नाम कमाने का लक्ष्य रखकर सेवा करना, इससे भी आन्तरिक क्रोध आता है। निमित्त व निर्मान भाव आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। (झ) अपनी चलाना या रौब गांठना – इससे अन्तत: लाभ कम, हानि अधिक होती है।

आन्तरिक क्रोध से मुक्त होने के लिये राजयोग का प्रयोग करके ईश्वरीय शक्तियों का अनुभव करें। यदि भीड़ में गाड़ी चलाते समय कोई गाड़ी साइड से छू जाये और हमें गुस्सा न आये तो खुश हो जाइये कि मुझे ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होनी शुरू हो गई है। ■■■

शांत मन से बेहतर निर्णय

■■■श्रीगोपाल नारसन, रुड़की

एक बार एक किसान ने अपनी घड़ी, चारे से भरे हुए बाड़े में खो दी। घड़ी बहुत कीमती थी। किसान ने उसकी बहुत खोजबीन की पर वह नहीं मिली। बाहर कुछ बच्चे खेल रहे थे और किसान को दूसरा काम भी था। उसने सोचा, क्यों न मैं इन बच्चों से घड़ी खोजने के लिए कहूँ। उसने बच्चों से कहा, जो बच्चा घड़ी खोजकर देगा उसे अच्छा इनाम मिलेगा। बच्चे इनाम के लालच में बाड़े में दौड़ गए और लगे घड़ी ढूँढ़ने लेकिन किसी भी बच्चे को घड़ी नहीं मिली।

तभी एक बच्चे ने किसान के पास जाकर कहा, मैं घड़ी खोजकर ला सकता हूँ पर सारे बच्चों को बाड़े से बाहर जाना होगा। किसान ने उसकी बात मान ली। किसान और बाकी सभी बच्चे बाड़े से बाहर चले गए। कुछ देर बाद बच्चा लौट आया और कीमती घड़ी उसके हाथ में थी। किसान बहुत खुश हुआ और आश्चर्यचकित होकर बच्चे से पूछा, तुमने घड़ी किस तरह खोजी जबकि बाकी बच्चे और मैं खुद भी इस काम में नाकाम हो चुके थे। बच्चे ने जवाब दिया, 'मैंने कुछ नहीं किया, बस, शांत मन से जमीन पर बैठ गया और घड़ी की आवाज सुनने की कोशिश करने लगा। बाड़े में शांति थी इसलिए मैंने उसकी आवाज सुन ली और उसी दिशा में देखा।'

एक शांत दिमाग बेहतर निर्णय ले सकता है, एक थके हुए दिमाग की तुलना में। दिन में कुछ समय के लिए शांति से बैठिये। अपने मस्तिष्क को शांत होने दीजिये, फिर देखिए, वह आपकी जिन्दगी को किस तरह से व्यवस्थित कर देता है। मन को शांत करना ही चुनौती है। ■■■

लम्बी हो संगमयुगी जीवन की आयु

■■■ ब्रह्माकुमार ताजेर आली, नलवाड़ी (आसाम)

अलौकिक जीवन में पुरुषार्थ करते-करते जब हम आगे बढ़ने लगते हैं, तब शिवबाबा की प्रेरणा प्रमाण ऊँचे-ऊँचे कार्य करने की इच्छा होने लगती है। संसार की हर आत्मा को बाबा का संदेश पहुँचाना, दिव्य गुणों को धारण कर देवी-देवताओं जैसे संस्कार बनाना, इसके पहले फरिश्ता स्थिति को प्राप्त करना जैसे लक्ष्य हम ले लेते हैं।

परन्तु, कर्म की गहन गति प्रमाण मनुष्य आत्मायें यह स्थिति जितना जल्दी प्राप्त करना चाहती हैं उतना जल्दी सम्भव नहीं है। कर्मातीत स्थिति व सम्पूर्णता प्राप्ति के बाद आत्मा इस तमोप्रधान संसार में ज्यादा देर तक ठहर नहीं सकती है।

सतयुग और त्रेतायुग में हमारे कर्म, अकर्म होने के कारण वहाँ कर्मों का खाता तैयार नहीं होता है लेकिन जब हम वाम मार्ग में पहुँचते हैं तब देह अभिमान में आ जाते हैं। देह अभिमान के कारण द्वापर युग से कर्मों का हिसाब-किताब शुरू हो जाता है। देह अभिमान जितना बढ़ता है उतने ही विकर्म भी बढ़ जाते हैं इसलिए पूरे 63 जन्म अर्थात् आधा कल्प अनेकानेक आत्माओं से हम सिर्फ कर्म के हिसाब ही बनाते हैं। पूरे ढाई हजार सालों में लाखों-करोड़ों आत्माओं से बनाए गये कर्मों के हिसाब-किताब चुक्ता करने हेतु उन्हों से भेंट करनी पड़ती है। इसके लिए भिन्न-भिन्न समय, परिवेश, वातावरण या स्थान में उनसे मिलकर ही हम उनसे कर्मों का हिसाब-किताब चुक्ता कर सकते हैं। अत: स्वाभाविक रूप से हमको संगमयुग में लम्बे समय तक जीना आवश्यक है।

पुरुषोत्तम संगमयुग हीरे तुल्य युग है। यह युग सिर्फ चढ़ती कला का युग है। बाकी चार युग उतरती कला के होते हैं। देहीअभिमानी स्थिति में रहकर, परमात्मा शिवबाबा के साथ-साथ जीवन व्यतीत करने के आधार से संगमयुगी जीवन विकर्म रहित बनाया जा सकता है। इसलिए हमें ध्यान रहे कि संगमयुग में कर्म, विकर्म न हों और श्रेष्ठ कर्मयुक्त यह संगमयुगी जीवन लम्बा हो ताकि हमारे भाग्य की लकीर भी लम्बी होती रहे।

पुरुषोत्तम संगमयुग की सर्वोत्तम विशेषता है प्रभु संग की प्राप्ति। द्वापरयुग से हम भगवान को ढूँढ़ते आये हैं। हमारी तलाश पूर्ण होती है इस छोटे से संगमयुग में। इस समय हम सही अर्थ में प्रभु परमात्मा को पहचान लेते हैं और उनसे मिलन मनाते हुए उनके साथ-साथ जीवन जीने लगते हैं। इसलिए परमेश्वर परमात्मा के संग का रंग हमारे जीवन पर चढ़ने लगता है। आधाकल्प ढूँढ़ने के बाद पाए गये सच्चे साजन के साथ जीने का यह सुहावना संगमयुग है। परमात्मा साजन को दिल देते हुए यह मौजों का जीवन जितना लम्बा हो, उतना ही अच्छा है। सिर्फ परमात्मा के साथ हमारा प्रेम सच्चा हो, नि:स्वार्थ हो और समझदारी का हो।

कर्म का हिसाब चुक्ता करने के साथ-साथ विकर्मों को दग्ध करना भी आवश्यक है। विकर्म भस्म न हों तो आत्मा पावन भी न हो लेकिन सेवाकार्य हमारे सामने इतने हैं कि अशरीरी होकर परमात्मा से योगयुक्त रहने के लिए बहुत कम समय मिलता है। इसीलिए हम जितना चाहें उतना जल्दी पावन बनते नहीं हैं। साथ-साथ कर्मभोग या बीमारी आदि के कारण भी अधिक समय के लिए योगयुक्त स्थिति हमको प्राप्त नहीं होती है। अत: संगमयुग का समय हमको ज्यादा मिले तो ही अच्छा है।

देवी-देवताओं में से अधिक गायन-पूजन व महिमा योग्य वे हैं जिन्होंने संगमयुग में श्रेष्ठ कर्म और सेवा का स्टॉक ज्यादा बढ़ाया तथा परमात्मा पिता से करंट लेकर आत्मा रूपी बैटरी को फुल चार्ज किया। विकर्म विनाश कर आत्मा को पावन बनाना, अलग बात है। साथ-साथ आत्मा रूपी बैटरी को फुल चार्ज कर पावरफुल व चमकीला बनाना, दूसरी बात है। तो आत्मा को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए पावर हाउस परमात्मा से करेन्ट खींचना ही है। इसके लिए हमारे संगमयुगी जीवन की आयु लम्बी न हो तो यह संभव नहीं होता है। व्यस्त जीवन में, कम समय के कारण परमात्मा शिवबाबा से योग लगाकर अधिक शक्ति हम जमा नहीं कर पाते है इसलिए जब तक विनाश न हो, शिवबाबा के साथ-साथ रहकर, विकर्मों को भस्म करते हुए, आत्मा रूपी बैटरी को हम चार्ज कर लें ताकि पूरे कल्प चमके और इस जहान में हमारा गायन-पूजन होता रहे। ■■■

नये ज्ञान से नया भारत

■■■ ब्रह्माकुमार डॉ. हरीन्द्र, सोनभद्र, वाराणसी

शिक्षा मानवीय सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास और राष्ट्र की प्रगति का सबसे सशक्त और प्रभावशाली साधन है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति का पथ, शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर, विद्यालयों के द्वार से होकर गुजरता है। हमारा देश एक नई सोच के साथ प्रगति के पथ पर चलने को तैयार दिख रहा है और भारत के पुनः विश्वगुरु बनने का उद्घोष वातावरण में सुनाई दे रहा है। नये भारत के कल को आकार देने के लिए, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष श्री के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित शिक्षाविदों की समिति द्वारा तैयार किया गया, नई शिक्षा नीति, 2019 का संकल्प-पत्र भारतीय जनमानस के बौद्धिक विमर्श हेतु प्रस्तुत हो चुका है। इसके विज़न (Vision) में कहा गया है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019 भारत केन्द्रित शिक्षा-व्यवस्था की परिकल्पना करती है जो सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके हमारे देश को निरन्तर एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान-समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान देती है।' इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित करते हुए कहा गया है कि 'यह शिक्षकों को, समाज के महत्वपूर्ण सदस्यों और परिवर्तन के मशालवाहकों के रूप में परिकल्पित करती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सफलता शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है।'

सत्य ज्ञान का सूचकांक

सुप्रसिद्ध विद्वान फ्रान्सिस बेकन ने कहा था कि यदि किसी राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि को जानना है तो वहाँ की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना चाहिए। शिक्षा वह दर्पण है जो समाज की सही तस्वीर दिखाती है। कहा जाता है, दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता है परन्तु वर्तमान समय में समृद्धि और प्रगति को मापने का पैमाना ही बदल गया है। आज राष्ट्र की आर्थिक प्रगति और समृद्धि को जी.डी.पी. और शेयर सूचनांक के पल-पल उतरने और चढ़ने वाले संकेतांकों के आधार पर मापा जा रहा है, क्या प्रगति का यह उचित मापदण्ड है? क्या उच्च जी.डी.पी. वाले देशों में लोग भूखे पेट और बेघर नहीं होते हैं? क्या वहाँ के लोग मानसिक सुख-शान्ति, सभ्यता और मानवता के शिखर पर पहुँच चुके हैं? क्या वहाँ हिंसा, अपराध, भेदभाव, बीमारियां और भ्रष्टाचार समाप्त हो चुके हैं? यदि उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' है तो धन इकट्ठा करने वाले देशों और लोगों को सभ्य और समृद्धि के शिखर पर माना जा सकता है अन्यथा प्रगति और समृद्धि मापने का यह मानक, सत्य के सूचकांक का आधा सच भी नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार, भारत विश्व का सर्वाधिक तनावग्रस्त देश है। विश्व को धर्म और अध्यात्म की शिक्षा देने वाला अपना देश भारत हो तनावग्रस्त है, यह बहुत ही दु:खद स्थिति है।

संस्कार और संस्कृति की शिक्षा से ही नया भारत

क्या सुख और समृद्धि कोई वस्तु या साधन है जिसे धन से खरीदा जा सकता है या कोई देवी-देवता है जिसे साधना या उपासना से प्राप्त किया जा सकता है? भारत में दीवाली के अवसर पर, घर की सफाई और पूजा-अर्चना द्वारा उल्लूवाहिनी श्री लक्ष्मीजी का घर में आह्वान किया जाता है परन्तु क्या सच में आधुनिक ढंग से सुसज्जित मकानों में सुख-समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी जी निवास करने लगती हैं? वास्तव में, सुख और समृद्धि की अनुभूति मन की उच्च मगन अवस्था में ही होती है। सर्व

विकारों से मुक्त स्वच्छ मन ही सुख-समृद्धि का निवास स्थान है अन्यथा दरिद्र मन तो वातानुकूलित हवेली में रहने पर भी रोता रहता है। फकीरी का जीवन जीने वाले संत-महात्मा मन की सोच के आधार से अमीरी का अनुभव करते हैं। वे सच में बेताज बादशाह होते हैं। यथार्थ सत्य यह है कि स्वच्छ मन ही जीवन में सुख और समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी के प्रवेश का एकमात्र द्वार है। मन की सफाई वर्तमान संगमयुग पर परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दी जा रही मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा से ही हो सकती है। ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा ही मन में जमी हुई जन्म-जन्मान्तर की अस्वच्छता रूपी पाप को धोने की सच्ची शिक्षा है। परन्तु इस कलियुगी दुनिया में ज्ञान की उल्टी गंगा बह रही है। विद्यालयों में मन की सफाई करने वाली आध्यात्मिक शिक्षा के स्थान पर धन की कमाई करने वाली शिक्षा से सुख और समृद्धि प्राप्त करने का असफल प्रयास किया जा रहा है। मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा से ही श्रेष्ठ संस्कार और संस्कृति का निर्माण होता है परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि ज्ञान, संस्कार और संस्कृति की शिक्षा देने वाले विद्यालय आज भोजनालय के रूप में बदल गए हैं! मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा के अभाव में भारत सशक्त और समृद्ध राष्ट्र कैसे बन सकेगा? भारत के विश्वगुरु बनने का सपना कैसे साकार होगा?

स्वस्थ तन और स्वस्थ मन से ही नये भारत का नवनिर्माण

किसी भी राष्ट्र की प्रगति और शक्ति का आधार केवल आर्थिक समृद्धि ही नहीं होती है वरन् चरित्रवान, परिश्रमी, प्रतिबद्ध और सत्यनिष्ठ नागरिक होते हैं। यदि मनुष्य का तन और मन स्वस्थ नहीं रहता है तो सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है। परिवार बच्चों के संस्कार की प्रथम पाठशाला होती है और बाद में विद्यालय में संस्कारों का शिक्षण एवं परिमार्जन होता है। वर्तमान समय में सारा परिदृश्य ही बदल गया है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त नौकरीपेशा माता-पिता अपने कार्यस्थल से तनाव और चिंता लेकर घर लौटते हैं। बच्चे उसी तनाव के वातावरण में पल रहे हैं। बच्चों के स्वास्थ्य की ठीक प्रकार से देखभाल करने तथा संस्कार देने के लिए माता-पिता के पास समय नहीं है। बच्चों को तनाव से बचाने के लिए घर तथा विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक बनाने की अत्यंत आवश्यकता है। तनावग्रस्त और दूषित सामाजिक वातावरण में पल रहे बच्चों के भविष्य के आधार पर नये भारत के निर्माण की संकल्पना कैसे साकार हो सकती है?

मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना समय की मांग

मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा तथा राजयोग के द्वारा ही वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में उत्पन्न विसंगतियों, समस्याओं और चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। वर्तमान संगमयुग पर स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिया जा रहा सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग, परिवार और विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक बनाने का एकमात्र विकल्प है। माध्यमिक और उच्च स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में यदि नैतिक शिक्षा के स्थान पर आध्यात्मिक शिक्षा को सम्मिलित करके एक पीरियड प्रतिदिन पढ़ाया जाए तो विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण लगभग 6 माह में ही सकारात्मक और प्रेरक बन जाएगा। मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा विद्यार्थी को उसकी जन्मजात आंतरिक शक्तियों की प्रत्यक्ष अनुभूति कराती है। अनुभव पर आधारित शिक्षा ही जीवन की दशा और दिशा का परिवर्तन करने में समर्थ होती है। मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा संस्कार और संस्कृति की शिक्षा है जिसकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बहुत बड़ी आवश्यकता है।

शिक्षक बने परिवर्तन का मशालवाहक

हजारों या लाखों बुझे हुए दीपक भी एक दीपक को जला नहीं सकते हैं परन्तु जला हुआ एक दीपक, एक हजार या अनंत दीपकों को प्रज्वलित कर सकता है। कुछ ऐसा ही परिदृश्य हमारी वर्तमान शिक्षा का है। बुझी हुई

आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य की आत्म-ज्योति को जागृत करने का एकमात्र साधन है। हठयोग भी केवल शारीरिक क्रियाओं तक सीमित होता है। अतः शिक्षकों को परिवर्तन की मशाल बनाने की संकल्पना को केवल मूल्य और पूरे भारत में संसाधनों और राजयोग के प्रशिक्षित शिक्षकों का एक विशाल नेटवर्क है जिसका सहयोग लेकर शिक्षकों को ज्ञान, मूल्य, संस्कार और संस्कृति के परिवर्तन का मशालवाहक बना सकते हैं। ■■■

हृदय हुआ परिवर्तन

ब्रह्माकुमार मनजीत, मुकिमपुरा, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

मुझे कुरुक्षेत्र जेल में ईश्वरीय ज्ञान मिला है। गाँव मुकिमपुरा, जिला कुरुक्षेत्र में 27 जुलाई, 2012 को पड़ोसियों से मेरा झगड़ा हो गया था जिसमें पड़ोसी को गोली लग गई और मेरे ऊपर धारा 307 का मुकदमा दर्ज हो गया। झगड़े में लौकिक परिवार के कुल 13 व्यक्ति शामिल थे, मेरे सहित सभी को जेल भेज दिया गया।

जेल के वातावरण में मैं तनाव में रहने लगा। बहुत प्रयासों के बाद भी जेल से बाहर नहीं निकल पाया। धीरे-धीरे तनाव बढ़ता गया। लगने लगा कि शायद कभी जेल से बाहर नहीं निकल पाऊँगा। एक दिन मैं जेल की बैरक के बाहर खड़ा था। एक ब्रह्माकुमारी बहन मेरे पास से गुजर रही थी। उसने मुझे कहा, आप भी क्लास में आकर ज्ञान सुनो, हो सकता है ईश्वरीय ज्ञान से आपकी समस्याओं का हल निकल आए। तब मैंने ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का अभ्यास करना शुरू कर दिया। शुरू में तो ज्यादा समझ में नहीं आया परन्तु धीरे-धीरे शान्ति मिलने लगी और मैं तनाव से बाहर आने लगा, ठीक से नींद आने लगी।

एक दिन मुझे पता चला कि मेरी जमानत हो गई है। जमानत होने के बाद मैं कुरुक्षेत्र सेवाकेन्द्र पर रोजाना मुरली क्लास करने लगा। मैंने निमित्त बहन जी से आग्रह किया कि मैं अपने गाँव में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला खोलना चाहता हूँ। दैवी बहनों ने मेरे लौकिक घर पर आकर सात दिन का राजयोग का कोर्स करवाया और वहाँ क्लास चलने लगी। मेरी युगल ईश्वरीय ज्ञान को धारण करने लगी। मैंने बाबा को कहा कि बाबा, आप मेरा झगड़ा सदा के लिए खत्म करवा दो। यह भी कहा कि झगड़े के कारण पड़ोसियों के साथ जो मनमुटाव है, वो भी सदा के लिए समाप्त हो जाए। पड़ोसी भी स्वयं कहने लगे कि हम सदा के लिए यह शत्रुता समाप्त करना चाहते हैं और 6 साल बाद सारा झगड़ा खत्म हो गया। हम सब बरी हो गए। आज दोनों परिवारों के बीच स्नेह और भाईचारे की भावना है। अब वो भी मेरे लौकिक घर में आकर ईश्वरीय ज्ञान सुनते हैं। मुझे खुशी है कि ज्ञान-योग के अभ्यास से और बहनों की स्नेह भरी पालना से मेरा हृदय परिवर्तन हुआ। संकल्प सकारात्मक बने। मेरे परिवर्तन, दृढ़ निश्चय और बाबा की मदद से यह सब संभव हो पाया है। अब गाँव-गाँव में जाकर सबको परमात्मा का ज्ञान देता हूँ। मैं जो संकल्प करता हूँ, शिव बाबा वह अवश्य पूरा करते हैं। मुझे अनुभव हो गया है कि ईश्वरीय ज्ञान से बड़ा कुछ भी नहीं है और आबू से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है। ■■■

कैसे लें बदला?

ब्रह्माकुमारी मीनू बहन, बहेड़ी, बरेली (उ. प्र.)

योगियों के जीवन में 'बदला' शब्द का कोई स्थान नहीं है क्योंकि योगी व्यक्ति निंदा-स्तुति, मान-अपमान, सुख-दु:ख सभी में समान रहता है। शिवबाबा कहते हैं कि सृष्टि-चक्र एक नाटक है, सभी मनुष्यात्मायें पार्टधारी हैं, किसी का भी कोई प्रकार से दोष नहीं है। हम बदला शब्द का यदि सकारात्मक विधि से प्रयोग करें तो यह कल्याणकारी सिद्ध होता है, जैसे समय आने पर, उचित मदद करके हम अपने सहयोगी के अहसान का बदला चुकाते हैं। सौगात लेकर घर आये मेहमान को सुन्दर-सी चीज बदले में अवश्य देते हैं आदि-आदि।

अधिक योग्य और महान बनकर दिखाओ

गहराई से विचार करने का विषय है कि भगवान हमारी इतनी सूक्ष्म व स्थूल पालना कर रहा है, ज्ञान-योग से हमारा शृंगार कर रहा है, अमृतवेले ब्रह्ममुहूर्त में जगाकर शक्तिशाली बनाता है, रोज मुरली सुनाता है, सारा दिन मददगार साथी बनकर रहता है, उसके इन अहसानों के बदले में हम उसे क्या दे रहे हैं? तुच्छ बेजान बातों का बदला लेने की सोचते हैं परन्तु इतना महान बदला, जो पूरे कल्प में लिया-दिया नहीं जा सकता, क्या उसके बारे में सोचने के लिए हमने समय निकाला है? आज की दुनिया में बदला लेने की बीमारी भयानक रूप ले चुकी है समाज की यह सबसे बड़ी बीमारी बन गई है जिसकी तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान है। इस बीमारी ने सुख और चैन छीन लिया है। बदला लेने के विषय में एक महान आत्मा ने बहुत सुन्दर कहा है, '**किसी से बदला लेना है तो उससे अधिक योग्य और महान बनकर दिखाओ**'। कितनी सुन्दर है यह युक्ति! क्राइस्ट का कथन था कि कोई तुम्हें एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल उसके आगे कर दो लेकिन परमपिता परमात्मा ने हमें कर्मों की गहन गति समझाई है कि दूसरा गाल आगे करने से तो हम उसके विकर्मों को और बढ़ावा दे रहे हैं अर्थात् उसके पाप का खाता बढ़वा रहे हैं। अत: दु:ख देने वाले के प्रति यही सोचो कि पूर्व जन्म का हिसाब-किताब समाप्त हो रहा है।

बहुत महत्व है गुप्त दान का

बदले में तो सुन्दर चीज ही दी जाती है। उसने गाली इसलिए दी क्योंकि उसके पास इससे सुन्दर चीज है ही नहीं, अब हम सोचें, हमें क्या देना है? क्या गाली? हमारे पास तो भगवान के दिए अनेकों कीमती उपहार हैं। हम कोई सुन्दर-सा वरदान या शुभभावना की सौगात मन ही मन उसे दे दें क्योंकि गुप्त दान का तो बहुत महत्व है। हम उसे ज्ञान-रत्न भी दे सकते हैं। परन्तु उस समय उसको इनकी कीमत नहीं रहेगी। अत: हे महान आत्माओ, आओ, इस प्रकार का बदला देकर हम इस जहान को बदल दें। मनुष्यात्माओं के भाग्य की रेखाएं बदल दें। अब हमें इसे व्यवहार में लाना ही होगा, नहीं तो धर्मराज हमसे बदला लेगा।

हम अक्सर तर्क देते हैं कि अमुक व्यक्ति हमारे सम्मान को ठेस पहुँचाता है, दूसरों के सामने हमारी बुराई करता है, हमारी प्राप्तियों के सम्बन्ध तुड़वा देता है, दूसरों की नजरों में हमें गिरा देता है और आगे निकलने की कोशिश करता है, तब हमें ईर्ष्या होती है और तब हमें भी संकल्प आते हैं कि हम भी कभी इसका फायदा नहीं होने देंगे। परन्तु, हम सोचें, क्या ऐसे घटिया विचार लाकर हम स्वयं को अपनी और भगवान की नजरों में नहीं गिरा रहे हैं? मानव के सामने अपमानित होने की चिन्ता है परन्तु स्वयं और भगवान के सम्मुख अपमानित होने की चिन्ता भी तो होनी चाहिए। क्या बदले की गन्दी

भावना मन में रखने से भगवान के साथ हमारे सम्बन्ध अच्छे रहेंगे? ऐसी बातें सोचने से इस कमाई के युग (पुरुषोत्तम संगमयुग) में हमारा कितना नुकसान हो रहा है, क्या इस पर हमने कभी गौर किया? अत: आओ, इन छोटी-छोटी बातों को छोड़ें और उससे सम्मान लें जो सारी दुनिया को सम्मान दे रहा है, उससे प्राप्तियाँ करें जो सारी दुनिया को प्राप्ति करा रहा है। अब समय को व्यर्थ न गवाँएँ। किसी ने ठीक ही कहा है – यूँ तो कम है सारी उम्र भी दोस्ती के लिए, पता नहीं कहाँ से वक्त निकल आता है दुश्मनी के लिए। ■■■

शब्दों से नहीं, व्यवहार से सिखाओ

■■■ ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

''मम्मी, आप इतनी अच्छी-अच्छी जगहों पर जाते हो और बीस मिनट से आप काम वाली बाई से बहस किए जा रहे हो'', बिटिया की यह बात सुनकर मैं सकते में आ गई। इसका अर्थ है कि मैं सिर्फ सत्संग में जा रही हूँ, सिर्फ हाजरी लगाकर आ रही हूँ। इतने सालों में क्या सीखा मैंने? बहुत ज्ञानी-ध्यानी समझने लगी हूँ खुद को। रोज समय निकालकर सत्संग में जाती हूँ, आकर बिटिया को और दूसरों को ज्ञान सुनाती हूँ तथा बहुत गर्व अनुभव करती हूँ कि देखो! कैसे सब याद रहता है मुझे!

जरा-सी प्रतिकूल परिस्थिति आयी नहीं और भूल गई कि मैं एक कमजोर से बात कर रही हूँ। क्या हुआ अगर उसने बिना बताए छुट्टी कर भी ली तो? क्या हुआ? क्या मैंने उसकी बात सुनने की कोशिश की? दूसरों की मदद करना, उनको समझना, गुस्से पर हर हाल में नियंत्रण रखना, मीठा बोलना, कोमलता का गुण अपनाये रखना ...ये सब एक क्षण में भूल गई मैं। बहुत ग्लानि हो रही है खुद पर। क्या सीखेगी मेरी बेटी मुझसे? क्या सोच रही होगी वह मेरे बारे में? कितनी खोखली लग रही होगी उसको मेरी शिक्षा-दीक्षा! क्या अब वह मेरे प्रवचन सुन व्यंगात्मक हँसी हँसेगी? क्या अब मैं उसे पहले जैसे जोश से, क्रोध के नुकसान समझा पाऊँगी? क्या उसे उसके क्रोध पर डाँट लगा पाऊँगी?

काश...काश! वो बीस मिनट समय की किताब से कट जाएँ। काश! वह सब भूल जाए। काश! मैंने काम वाली के कन्धे पर स्नेह से हाथ रखकर पूछा होता, ''सीमा, कल नहीं आये? तबीयत तो ठीक है ना? घर पर सब कुशल से तो हैं? अगर कोई काम हो तो मुझे फोन कर दिया करो कि तुम नहीं आ रहे।'' काश! उसकी तबीयत खराब की बात सुनकर मैंने उसको चाय बनाकर दी होती। काश! मैं उसको एक दिन की छुट्टी दे देती। काश! मैंने उसे डॉक्टर के पास जाने के लिए पैसे दे दिए होते। क्या मैं इतनी असहाय हूँ कि दो दिन खुद काम नहीं कर सकती? काश! मैंने खुद पर नियंत्रण रखा होता! यदि मेरा व्यवहार ऐसा होता तो मुझे शायद बिटिया को कहानियाँ या सत्संग सुनाने की आवश्यकता ही न पड़ती। कितना सीख लेती वो मेरे कुछ पलों के व्यवहार से! कितना गर्व करती वो मुझ पर! कोमलता और सहायता करने के गुण की शायद नींव पड़ जाती उसके कोमल मन में।

कोई बात नहीं...अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। ऐसे मौके आते रहते हैं। मुझे उसको किताबी ज्ञान से नहीं, अपने व्यवहार से नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी है। मेरे शब्द उसे तभी प्रभावित करेंगे जब शब्दों में और मेरे व्यवहार से उसे समानता दिखाई देगी। मैं जब विपरीत परिस्थितियों में अनुकूल और सामान्य रहूँगी तो उसके लिए ये सबसे अच्छा पाठ होगा। उसकी किसी भी आदत को सुधारने के लिए मुझे अपनी आदतों में सुधार करना होगा। मुझे उसके लिए जीती-जागती पुस्तक बनना होगा। हाँ! हाँ! मैं ऐसा करूँगी। आज से, अभी से। ■■■

अगर आप जोखिम उठाने के लिये तैयार नहीं हैं तो आप हमेशा जोखिम उठाने वालों के लिये कार्य करेंगे

शिवबाबा हैं मन के सच्चे मीत

■■■ ब्रह्माकुमार विजय, हिंगोली

मेरा जन्म सन् 1962 में हिंगोली शहर के समीप एक खेडे गाँव में हुआ। पिताजी स्कूल मास्टर थे। वे धार्मिक विचारों के थे, रोज सुबह पूजा-पाठ करके ही घर के बाहर निकलते थे। उनको बहुत ही कम तनख्वाह मिलती थी, हम पाँच भाई-बहनों का खर्चा बड़ी मुश्किल से चलता था।

मैं हनुमान जी का उपासक था, उनके भजन-कीर्तन और कथायें सुनने में बड़ी रुचि रखता था। बड़ी मुश्किल से 9वीं तक ही पढ़ पाया और कुछ दिन बाद एक निजी कंपनी में काम करने लगा। समय गुजरता गया, माताजी-पिताजी शरीर छोड़ गये। मुझे उनकी याद बहुत सताती थी और घर की जिम्मेदारी भी बढ़ गई थी। दुख, क्लेश और गरीबी के कारण मैं उदास रहने लगा।

एक दिन सफेद वस्त्रधारी एक ब्रह्माकुमार भाई मेरे घर आए और मुस्कराते हुए बोले कि मैं तुम्हें खुशियों भरी दुनिया दिखाता हूँ, वहाँ खुशियाँ ही खुशियाँ हैं। मेरे परम भाग्य के खुलने का दिन आ चुका था। तीस अप्रैल, 2012 को स्वयं परमात्मा पिता ने मुझको ढूँढ़ निकाला। हम दोनों बातों-बातों में नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में चले गये। वहाँ सामने ही हवा में लहराता हुआ शिवबाबा का झंडा दिखाई दिया, जो मुझे बहुत ही प्यारा लगा। मैं उसे देखता ही रह गया।

मन को मिली सच्ची शान्ति

सेवाकेन्द्र के सभागार में प्रवेश होकर मैं वहाँ लगे परमात्मा के स्लोगन और महावाक्य पढ़ने लगा। एक-एक महावाक्य पढ़ते हुए दिल को गहरी शान्ति महसूस हुई। इसके बाद मैं योग-कक्ष में गया। वहाँ धीरे-धीरे एक गीत बजने लगा। गीत के बोल थे, 'पंछी रे उड़ जा प्यारे नीले अंबर के उस पार।' इस गीत ने मेरे दिल पर जादू कर दिया। मेरा मन रूपी मयूर नीले गगन के पार उड़ने के लिए बेकरार हो उठा। मुझे महसूस हो रहा था कि मैं कल्प पहले भी यहाँ आया था। उसी पल, परमपिता परमात्मा शिवबाबा पर अटूट निश्चय करते हुए मैं तन-मन से उन पर समर्पित हो गया। मुझे आत्मा-परमात्मा और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान समझाया गया। ईश्वरीय पढ़ाई से मन को सच्ची शान्ति, रूहानी खुशी और आत्मा को दिव्य खुराक मिलने लगी। तब से स्वपरिवर्तन हो गया। मन और बुद्धि ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर होने लगे। जीवन की बगिया खुशियों से महकने लगी। आपस में निस्वार्थ प्यार, आत्मिक प्यार और हर एक के मधुर बोलने की ईश्वरीय परिवार की रीत मुझे बहुत भाने लगी।

आर्थिक समस्या का हुआ हल

राजयोग द्वारा शिवबाबा ने महसूस कराया कि बच्चे, अब मैं आ गया हूँ, तू निश्चिंत और बेफिक्र बादशाह बनकर रह। बच्चे, मैं तुम्हें ज्ञान और राजयोग सिखाने स्वयं परमधाम से यहाँ आ चुका हूँ। कभी साथ न छोड़ने के लिए मैं दिल से शिव बाबा का शुक्रिया अदा करता हूँ। मन में बार-बार यही गीत बजता रहता है 'साथ-साथ रहना मेरी सारी जिंदगी, तुझको पाके लगे प्यारी जिंदगी।' राजयोग के अभ्यास से जीवन जीने की कला समझ में आ गई। घर की आर्थिक समस्या का हल होने लगा। घर और बाहर का संतुलन रखना आने लगा।

मैं रोज सवेरे योग-कक्ष में योग लगाकर अपना हाल बाबा को सुनाता हूँ। बाबा मुझ में ऐसी शक्ति भर देते हैं कि काम करते हुए थकान महसूस होती ही नहीं। मैं ईश्वरीय सेवाधारी हूँ, मैं निमित्त हूँ, बाबा ही सेवा करा रहे हैं, इस स्वमान को रोज सवेरे मन में पक्का करता हूँ। अब मेरा हर पल बाबा से जुड़ा हुआ है, हर पल बाबा के साथ का अनुभव करता हूँ। मेरा कोई कार्य शिव बाबा के बिना नहीं हो सकता। वही मेरे मन के सच्चे मीत हैं, मुझको अपनी छत्रछाया में सुरक्षित रखते हैं। माँ बनकर मुझको अपार स्नेह देते हैं। भाई बनकर हर हाल में साथ निभाने का वादा करते हैं। मुझे बहुत ही खुशी मिल रही है। मुझे परमात्मा से सब रिश्तों का भरपूर प्यार मिल रहा है। मैं परमभाग्यशाली आत्मा हूँ। ■■■

'काम' और 'प्रेम' में अन्तर

इस संसार में एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से मृदुल नाता जोड़ने वाला जो मनोभाव है, उसी का नाम 'प्रेम' है। जैसे पृथ्वी का गुरुत्व आकर्षण चीजों को अपनी ओर आकर्षित करता है, वैसे ही एक व्यक्ति में दूसरे के प्रति जो आकर्षण होता है, उसी को प्रेम कहा जाता है। प्रेम ऐसी मनोस्थिति है अथवा एक ऐसा अनुभव है जो आनन्द के अति निकट है, नहीं, नहीं, प्रेम तो आनन्द का सहगामी ही है अथवा आनन्द का उत्पादक ही है। यदि संसार में प्रेम न हो तो मनुष्य का जीना ही मुश्किल हो जायेगा क्योंकि तब मनुष्य किसलिए जीए, किसके साथ जीए? अत: प्रेम जीवन को स्थिर रखने वाला, जीवन का सार है अथवा मनुष्य के मन को भाने वाला एक रस है।

प्रेम ही का विरोधी मनोभाव घृणा है। घृणा से अनेकानेक अशान्तकारी तथा दुखोत्पादक संकल्प-विकल्प और विचार उत्पन्न होते हैं परन्तु प्रेम से मनुष्य के मन में एक-दूसरे के कल्याण की भावना पैदा होती है। प्रेम मनुष्य को दूसरे के लिए अपने सुख को त्यागने में भी सुख की अनुभूति करता है जबकि घृणा से मनुष्य के मन को एक दाह का अनुभव होता है और वह दूसरे के सम्बन्ध अथवा सम्पर्क को ही त्याग देना चाहता है। अत: प्रेम एक स्वाभाविक, आवश्यक और सात्विक गुण है। परमात्मा के प्रति मन में प्रेम का होना ही भक्ति तथा योग है। परमात्मा के प्रेम की एक बूँद प्राप्त करने के लिए भी प्रभु-प्रेमी व्यक्ति अपने जीवन की बाजी लगाने को तैयार हो जाता है। प्रेम एक बहुत ही उच्च, बहुत ही पवित्र गुण अथवा अनुभूति है। परन्तु मनुष्य गलती से इसके विकृत रूप को भी प्रेम मान बैठता है। वह मोह, काम और लोभ को भी प्रेम समझ बैठता है। अत: वह इनकी दलदल में फँसकर जीवन को दुखी बना बैठता है।

प्रेम और विकार में अन्तर

यदि ध्यान से देखा जाये तो प्रेम और काम में या प्रेम और मोह में बहुत अन्तर है। प्रेम दूसरे के प्रति त्याग की भावना पैदा करता है जबकि 'काम' में मनुष्य का स्वार्थ होता है। यदि कामी व्यक्ति की वासना-तृप्ति के प्रस्ताव को स्वीकार न किया जाये तो वह तुरन्त ही क्रोधावेश में आ जाता है और घृणा ही की अभिव्यक्ति करता है। कामी व्यक्ति पत्नी के जीवन को अपने हाथ में एक खिलौना मानता है जिससे कि उसका अपना मनोबहलाव पूरा होना चाहिए, उसमें खिलौने की भावनाओं का अस्तित्व नहीं रहता। कामी व्यक्ति छोटी-छोटी बात पर भी अपनी पत्नी को झाड़ और फटकार देता है। वह उस पर हाथ उठाने को भी तैयार हो जाता है और घर से निकल जाने की फरमाइश करने में भी देर नहीं लगाता। वह उसे अपने बराबर या अपने से भी ऊँचा जीवन-साथी नहीं मानता बल्कि पत्नी के जीवन को अपनी दया ही पर अधिक समझता है। यदि पत्नी का स्वास्थ्य ठीक न हो

अथवा वह कमज़ोर हो अथवा वासना-भोग की उसे इच्छा न हो तो न सही, पति को यदि वासना-तृप्ति करनी है तो उसकी कामना पूरी होनी चाहिए; उसके लिए गृहस्थ का यही मुख्य प्रयोजन है।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि 'काम' भाव एक दानवी वृत्ति है, यह आसुरी स्वभाव की अभिव्यक्ति है, यह एक मनोविकार है। यह एक तुच्छ अथवा उच्छृंखल मनोवृत्ति है। इसका जन्म मन की चंचलता से होता है। यह घास की आग की तरह पैदा होता है और फिर बुझ जाता है और फिर बांस की आग की भाँति जल्दी ही जग जाता है। यह अपने तथा दूसरे के जीवन को ह्रास की ओर ले जाने वाला, एक-दूसरे को गर्त में गिराने वाला, आत्म-ग्लानि के भाव को पैदा करने वाला है। यह कुत्सित संकल्प है। यदि यह पवित्र अथवा उत्तम भाव हो तो मनुष्य इसकी पूर्णाभिव्यक्ति के लिए एकान्त और अन्धेरे का स्थान क्यों ढूंढता है? वह इसे छिप कर क्यों करता है? क्या माता अपने बच्चों से या भाई अपने भाई से छिप कर प्यार करता है? क्या उसकी चर्चा होने पर वह कभी लज्जा का अनुभव करता है? अन्य किसी भी प्रकार के प्यार की अभिव्यक्ति का उल्लेख 'काला मुँह करना' – इस प्रकार के निन्दित शब्दों या मुहावरों से नहीं किया जाता। अन्य किसी भी प्रकार के प्रेम के व्यापक रूप को 'व्यभिचार' की संज्ञा नहीं दी जाती। अन्य प्रकार के प्यार की अभिव्यक्ति यदि एक व्यक्ति करता है और दूसरा नहीं करता तो उसे बलात्कार नहीं कहा जाता। भाई अपने भाई को अथवा माता अपने पुत्र को जब प्रेम की दृष्टि से देखती है तो उसकी दृष्टि को भी 'पापमय दृष्टि' नहीं कहा जाता है।

काम और प्रेम में रात-दिन का अन्तर

अतः यह स्पष्ट प्रकार से मालूम होना चाहिए कि काम और प्रेम में रात-दिन का अन्तर है। काम एक प्रकार की इन्द्रियलोलुपता, चंचलता अथवा चित्त की विक्षिप्तता है जबकि प्रेम मन में दूसरे के प्रति अपनेपन का शुद्ध भाव है। प्रेम जितना व्यापक होता है, उतना दिव्य और शुद्ध होता है, उतना ही वह मनुष्य को महान बनाता है, काम जितना व्यापक होता है उतना ही व्यभिचार का रूप लेता है और मनुष्य को चरित्रहीन तथा लम्पट बनाता है। प्रेम का उद्रेक मन के मैल को धोता है जबकि काम मनुष्य के मन को और अधिक मैला तथा संकुचित बनाता है। प्रेम दूसरे के गुणों, विचारों और कर्त्तव्यों के कारण भी हो सकता है और अपने मन की महानता के कारण भी। परन्तु 'काम' दूसरे के शारीरिक नाम-रूप पर आधारित होता है। जैसे-जैसे जवानी का उभार कम होता है और

शेष भाग पृष्ठ 30 पर

रामपुर बुशहैर (शिमला)- लवी मेले में लगाई गई आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल भ्राता बंडारु दत्तात्रेय, ब्र.कु.कृष्णा बहन तथा अन्य।

चम्बा- हिमाचल प्रदेश के विधानसभा उपाध्यक्ष भ्राता हंसराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सोनिया बहन।

फरीदाबाद (सेक्टर-11)- नवनियुक्त जिलाधीश भ्राता यशपाल यादव को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.मुनी बहन, ब्र.कु.राधेश्याम भाई, उद्योगपति भ्राता दिलीप यादव तथा अन्य उनके साथ।

कड़पा (आम शान्ति नगर)- किसान सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.सुमंत भाई, संयुक्त जिलाधीश बहन गौतमी, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. भ्राता मुरली कृष्णा, डी.एफ.ओ भ्राता नागराजु तथा अन्य।

चरखी दादरी- ब्र.कु.प्रेमलता बहन को सम्मानित करते हुए विधायक भ्राता सोमवीर सागवान तथा उपायुक्त भ्राता धर्मवीर सिंह।

कठुआ- जम्मू कश्मीर के भाजपा अध्यक्ष भ्राता रविन्द्र रैना को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शारदा बहन तथा ब्र.कु.वीना बहन।

खमाणो (लुधियाना)- भ्राता रणजीत सिंह ढड्रीवाले बाबा जी को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु.नीलिमा बहन तथा ब्र.कु.सुरभि बहन उनके साथ।

कैथल- नगरपरिषद् अध्यक्षा बहन सीमा कश्यप को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.सतीश भाई तथा ब्र.कु.दयाल भाई।

सन्नौर (लुधियाना)- समाजसेविका बहन रानी गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.योगिनी बहन।

मैंगलोर (अशोक नगर)- क्रिसमस कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए बिशप भ्राता पीटर पॉल साल्दान्हा, ब्र.कु.विश्वेश्वरी बहन तथा अन्य।

पृष्ठ 28 का शेष भाग

दूसरे के रूप-लावण्य की कलाएँ घटने लगती हैं, वैसे 'काम' भाव भी वहाँ से हटने लगता है। प्रेम का सम्बन्ध शारीरिक आयु, अवस्था या रूप-लावण्य से नहीं है। 'कामी' व्यक्ति की वृत्ति यदि अपनी पत्नी से हटकर कहीं और भटकती है, तो उसका अपना मन भी उसे अपराधी मानता है जबकि प्रेम करने वाला व्यक्ति निर्भय होता है और उसमें अपने प्रति यह भावना नहीं होती कि वह कोई पाप कर रहा है।

काम की भाषा हिंसात्मक

'काम' को प्रेम मानने वाले व्यक्ति स्वयं ही कहते हैं कि 'आपने मुझे कसकर प्रेम का तीर मारा है अथवा आपकी बर्छी-जैसी दृष्टि से मैं घायल हो गया हूँ' अथवा 'मैं आपके प्रेम-पाश का कैदी बन गया हूँ' या 'आपकी निगाह ने तो मुझ पर जुल्म ढा दिया है' या 'आपकी सूरत ने तो मुझ पर बिजली गिरा दी है' इत्यादि। प्रेम की भाषा ऐसी हिंसात्मक शब्दों से नहीं बनी है। प्रेम मनुष्य के मन में एक तूफान या आंधी पैदा नहीं करता, उसे अनियंत्रित नहीं बनाता, उसके मन को उलझाता नहीं, उसे मानसिक ग्रंथियाँ नहीं देता बल्कि उसके स्वरूप को विकसित करता है, उसके चेहरे पर स्थायी हर्ष लाता है।

काम स्वार्थ पर एक ओढ़नी है

प्रेम का अस्तित्व दूसरे के शोषण के लिए नहीं होता। 'काम' जहाँ होता है, वह दूसरे के रक्त को चूसने के लिए उकसाता और फिर उसके बाद वह वहाँ से उठ जाता है। प्रेम हँस है तो 'काम' नाली का कीड़ा है। प्रेम एक सद्परिचय है परन्तु 'काम' स्वार्थ पर एक ओढ़नी है। कामी व्यक्ति रट तो यही लगाता है कि 'मुझे तुम से प्रेम है' परन्तु उसके इन शब्दों के पीछे दूसरे के रूप-लावण्य को लूटने ही का भाव छिपा होता है। कामी भी मुस्कराता है परन्तु उसकी मुस्कराहट को त्योरियों में बदलते देर नहीं लगती।

'काम' प्रेम नहीं है

सच्चे प्रेम का आधार आत्मियता है और आत्मियता का आधार स्वयं को 'आत्मा' मानना है। अत: शुद्ध प्रेम देह की आयु, अवस्था, लिंग-भेद या रंग-रूप पर नहीं टिका होता। यह हदों में नहीं बँटा होता। उसका प्रेरक भाव 'हरेक के कल्याण की कामना' ही है। अत: हमें यह जानना चाहिए कि 'काम' को 'प्रेम' कहना प्रेम को कलंकित करना है।

प्रेम को 'नरक का द्वार' नहीं कहा गया, काम ही को 'महाशत्रु' और 'नरक का द्वार' कहा गया है। प्रेम ही के कारण तो स्वर्ग सही अर्थ में स्वर्ग है। 'काम' को 'कटारी' कहा गया है, प्रेम तो जीवनदायक है। अत: जो लोग 'काम' को प्रेम मानकर अपने जीवन का सर्वनाश करने में लगे हुए हैं, उन्हें सचेत होना चाहिए। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि गृहस्थ जीवन में भी पत्नी की स्वीकृति या इच्छा के बिना काम-भोग बलात्कार ही है। जो मनुष्य इन्द्रिय-नियन्त्रण में अयोग्य है, उसे व्यापक व्यभिचार से बचाने का एक निकृष्ट उपाय है गृहस्थ में काम भोग। यह बडे पाप से बचाने के लिए छोटे पाप के लिए स्वीकृति है। परन्तु जो इसे 'धर्म' या 'प्रेम' मान लेता है, वह स्वयं को धोखा देता है। वह प्रभु के प्यार से हटकर हाड़-माँस के आकर्षण में बँध जाता है। वह योगी के बजाय भोगी बन जाता है। वह अपने आत्मिक विकास के द्वार बन्द कर देता है। वह समूचे समाज से सच्चा प्यार करने में अयोग्य सिद्ध होता है। उसका प्यार अपनी पत्नी की देह तथा अपने पुत्रों की आवश्यकता की पूर्ति तथा अपने घर की चार दीवारी तक सीमित हो जाती है। वह समाज के लिए अपने जीवन को नहीं दे सकता क्योंकि वह अपना जीवन इन्हीं को दे देता है। उसकी शारीरिक शक्ति, आर्थिक सामर्थ्य, बौद्धिक क्षमता सब कुछ काम को केन्द्र बनाकर बनाई गई गृहस्थी में ही लग जाते हैं। सच्चे सुख की आशा में वह मकड़ी की तरह गृहस्थी का जाल बनाता है, फिर उसी में ही स्वयं फँसकर लटक जाता है। अपना सर्वस्व लुटा चुकने के बाद जब उसे होश आता है, तब देर हो चुकी होती है; तब हाथ मसलने के सिवा कुछ नहीं हो सकता। ■■■

सन्तोषी सदा सुखी

■■■ ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

एक बार एक देश में अकाल पड़ने से बहुत विकट स्थिति बन गई। लोग भूखे मरने लगे। एक छोटे- से शहर में एक धनी दयालु व्यक्ति थे, उन्होंने शहर के सभी छोटे-छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक रोटी देने की घोषणा कर दी। दूसरे दिन सवेरे के वक्त एक बगीचे में सभी बच्चे इकट्ठे हो गये। रोटियाँ बाँटी गई। रोटियाँ छोटी-बड़ी थी इसलिए बड़ी रोटियाँ लेने के लिए बच्चे धक्का-मुक्की करने लगे। एक नन्हीं कन्या एक तरफ चुपचाप खड़ी थी। वह सबसे अन्त में आगे बढ़ी और टोकरे में बची हुई सबसे छोटी रोटी लेकर खुशी-खुशी अपने घर चली गई। दूसरे दिन सवेरे उसी पार्क में पुन: रोटियाँ बाँटी गई। उस लड़की को आज भी अन्त में सबसे छोटी रोटी मिली। घर जाकर उसने रोटी को जैसे ही तोड़ा उसमें से सोने की एक मोहर मिली।

लड़की की माँ ने कहा, बेटी, यह सोने की मोहर उस धनी व्यक्ति को दे आओ। लड़की दौड़ कर मोहर देने पहुँच गई। धनी व्यक्ति ने पूछा, रोटी तो सब बँट गई, अब देर से क्यों आई हो? लड़की ने कहा, मैं तो रोटी लेकर चली गई थी परन्तु मेरी रोटी में यह सोने की मोहर निकली है, शायद आटे में गिर गई होगी, देने आई हूँ। धनी व्यक्ति ने कहा, नहीं बेटी, यह तुम्हारे सन्तोष का पुरस्कार है।

लड़की ने सिर हिलाते हुए कहा, पर मेरे सन्तोष का फल तो मुझे तभी मिल गया था जब मुझे सभी बच्चों के बीच जाकर, धक्के नहीं खाने पड़े। धनी व्यक्ति बहुत खुश हुआ। उसने उस लड़की को अपनी धर्मपुत्री बना लिया और उसकी माँ के लिए मासिक वेतन निश्चित कर दिया। इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि सन्तोष अपने आप में इनाम है। इसके आने से अन्य खजाने भी पीछे-पीछे आ जाते हैं।

जितना सन्तोषी उतना सुख

मूर्ख व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता जबकि बुद्धिमान व्यक्ति की सबसे बड़ी पूँजी सन्तुष्टता ही है। सन्तोष सबसे बड़ा खजाना है। जो सन्तुष्ट रहते है वे सदा खुश रहते हैं तथा ईश्वरीय मदद भी उन्हें ही मिलती है। सन्तोष सबसे बड़ा धन और सन्तोषी सर्वाधिक धनी होता है क्योंकि इच्छाओं का अन्त, निर्लिप्तता की परम सुखमय अवस्था को लाता है अर्थात् जो जितना ज्यादा सन्तोषी होगा उतना ही अधिक सुखी होगा। अधिक की कामना लोभ को जन्म देती है और लोभ सुख-शान्ति का हरण कर लेता है।

सन्तोष बेबसी नहीं, समझदारी है

सन्तोषी होना समझदारी है। अपनी सीमा को पहचान कर दूसरे से तुलना ना करते हुए अपने आप को समर्थ बनाना भी सन्तोष है। फिर भी जिनके पास बहुत कुछ है, वे भी कहीं ना कहीं अधूरे हैं इसलिए इस बात को समझना जरूरी है कि सबको सब कुछ नहीं मिल पाता। सन्तोष कोई बेबसी नहीं है, यह समझदारी है। व्यक्ति जब भी सन्तोषी बनना चाहेगा, उसका अहंकार भी उसके सामने आयेगा जो दूसरों से आगे निकलने के लिए प्रेरित करेगा। सन्तोषी बनने में बाधा जरूर आयेगी परन्तु सच्चा सन्तोषी हर बाधा को पार कर लेता है।

अधिक चाह असन्तोष उत्पन्न करती है

सन्तोष खुशियों की कुन्जी है। यदि मनुष्य अपने जीवन में, स्व से, सेवा से और सर्व से सन्तुष्ट है तो किसी भी तरह का दुख या चिन्ता उसे परेशान नहीं कर सकते। परिश्रम से कमाया धन और उसका उचित मदों में न्यायपूर्ण खर्च ही मनुष्य को आत्मिक सन्तोष प्रदान करता है। उचित प्रयत्न के परिणाम से जो प्राप्त हो उसमें सन्तुष्ट रहना परम सुख कहा जाता है। अधिक की चाह, असन्तोष उत्पन्न करती है और असन्तोष अनुचित कर्मों का वाहक बन जाता है।

खम्मम- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तेलंगाना के यातायात मंत्री भ्राता पुव्वाड़ा अजय कुमार, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.सुधाकर भाई, ब्र.कु.अरुणा बहन तथा अन्य।

न्यामथी (कर्नाटक)- ओम शान्ति भवन का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता रेणुकाचार्य, ब्र.कु.डॉ.बसवराज राजऋषि, ब्र.कु.निर्मला बहन, ब्र.कु.वन्दना बहन तथा अन्य।

बैंगलोर (जे.पी.नगर)- ब्रह्माबाबा की 143वीं जन्म जयन्ती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बी.ई.एम.एल. लिमिटेड के वित्त निदेशक भ्राता सूरज प्रकाश तथा ब्र.कु.सूर्यप्रभा बहन।

विशाखापट्टनम (ओल्ड गाजुवाका)- किसान सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सोमेश्वरी बहन, प्राचार्य बहन सरस्वती, बागवानी प्रभाग की प्रोजेक्ट निदेशिका बहन शैलजा गारू, ब्र.कु.सरला बहन, आत्मा प्रोजेक्ट के निदेशक भ्राता एम.के.राव गारू, लायन्स क्लब सदस्य भ्राता सुब्बारेड्डी गारू तथा अन्य।

मैसूरू (यादवगिरि)- पिताश्री ब्रह्मा बाबा की 143वीं जन्म जयन्ती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एयरपोर्ट निदेशक भ्राता मंजूनाथ, मैसूरू कारपोरेशन के संयुक्त निदेशक भ्राता जयसिंहा, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य।

मछलीपट्टनम- राजयोग तपस्या भट्ठी का शुभारम्भ करते हुए पूर्व नगराध्यक्ष भ्राता एम.वी.बाबा प्रसाद गारू, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.भारती बहन तथा अन्य।

गुलबर्गा (अमृत सरोवर)- बागवानी विभाग कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बागवानी विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ.भ्राता एस.बी.दिड्डीमनी, उपनिदेशक भ्राता रामचन्द्र, कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.भ्राता ए.एस.पाटील, ब्र.कु.विजया बहन तथा अन्य।

वनपर्ती- 'परमात्म शक्ति से स्वर्णिम युग की स्थापना' विषयक कार्यक्रम में संयुक्त जिलाधीश भ्राता वेणुगोपाल का सम्मान करते हुए ब्र.कु.प्रेम भाई जी साथ में ब्र.कु.विजया बहन, ब्र.कु.महादेवी बहन तथा ब्र.कु.शोभा बहन।

सोनीपत रिट्रीट सेन्टर- सोनीपत रिट्रीट सेन्टर के 6वें वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ करते हुए सांसद भ्राता रमेश कौशिक, पूर्व मन्त्री बहन कविता जैन, विधायक बहन निर्मल चौधरी, बहन सुमन मंजरी तथा ब्र.कु.अमीरचंद भाई।

सोनीपत (सेक्टर-15)- ब्र.कु.प्रमोद बहन को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए विधायक भ्राता मनमोहन लाल बड़ौली।

सफीदों- हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.भरत भाई, ब्र.कु.भारतभूषण भाई, ब्र.कु.सरला बहन, विधायक भ्राता सुभाष देशवाल, पूर्व विधायक भ्राता कालीराम पटवारी, ब्र.कु.स्नेह बहन तथा अन्य।

फरीदाबाद (संजय एन्कलेव)- 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत, स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' विषयक अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुभद्रा बहन, ब्र.कु.ज्योति बहन, भाजपा के मीडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता प्रमोद जी, संत साधु राम, सरपंच भ्राता गरीराज लोहिया तथा अन्य।

करनाल (सेक्टर-7)- प्रसिद्ध गायक भ्राता कैलाश खेर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन तथा ब्र.कु.दयाल भाई। साथ में ब्र.कु.सतीश भाई तथा नीफा अध्यक्ष भ्राता प्रीतपाल सिंह।

बहादुरगढ़- मिशन अस्पताल में ध्यान कक्ष का उद्घाटन करते हुए हॉस्पिटल के निदेशक भ्राता अजय जैन, हॉस्पिटल का स्टाफ, ब्र.कु.अंजली बहन तथा ब्र.कु.विनीता बहन।

तोशाम- राजकीय वरिष्ट माध्यमिक विद्यालय रतेरा में ब्र.कु.रोशनी बहन को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए प्राचार्य भ्राता विकास कुमार, अध्यापिका बहन मीनाक्षी उधवा तथा अध्यापिका बहन हरदीप कौर।

बहल- गाँव माधोपुर में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शकुन्तला बहन, ब्र.कु.पूनम बहन तथा माता-बहनें।

संग्रहवृत्ति है असन्तोष

वर्तमान समय इन्सान दस वस्तुएँ (धन, सम्पत्ति, वोट, हथियार, सहायक, जय, प्रताप, बल, चतुराई और बड़ाई) संग्रह करना चाहता है और नित्य बढ़ा भी रहा है। जिस प्रकार प्रत्येक लोभ पर लोभ बढ़ता है ऐसे इन दस वस्तुओं के बढ़ने से भी मनुष्य सन्तुष्ट नहीं है। इन्सान के पास सब कुछ होते हुए भी वह खाली हाथ है अर्थात् असन्तोष से भरा है। वह दुनिया की हर बात जान लेता है परन्तु स्वयं को फिर भी नहीं जान पाता। जब तक हम अपने को नहीं जानते तब तक विश्व भर की जानकारियाँ पा भी लें तो भी अशान्त ही रहेंगे।

दुआयें लेना और दुआयें देना – यह बीज है

दुआयें वहाँ मिलती हैं जहा सन्तुष्टता है। इसलिए सदा सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। अगर कोई दुख दे भी तो भी दुख देने वाली आत्मा को दुआयें देनी हैं। सहन करना भी पड़े तो समाने की शक्ति द्वारा सहनशीलता का गुण धारण कर सबको दुआयें देनी हैं और दुआयें लेनी भी हैं। दुआयें लेना और दुआयें देना – यह बीज है जिसमें सन्तुष्टता का पौधा समाया हुआ है। इस पौधे से क्षमा और रहम का फल निकलता है।

शिवभगवानुवाच – जो व्यक्ति देही अभिमानी स्थिति में स्थित रहकर कर्म करते हैं वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते हैं और दूसरों को भी सन्तुष्ट करते हैं। उन्हें सन्तुष्टमणि का वरदान स्वत: प्राप्त हो जाता है। ■■■

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान) - 307510
2. प्रकाशनावधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त
4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त
5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय। मैं, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्मप्रकाश)
सम्पादक

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 100/- आजीवन : 2,000/-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

सासाराम – ब्र.कु. बबिता बहन आध्यात्मिक गुरु पायलट बाबा को ईश्वरीय सौगात एवं साहित्य देती हुई। साथ में ब्र.कु. नीतू बहन।

हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- राज्यस्तरीय ऊर्जा संरक्षण अवार्ड से ब्र.कु.कुलदीप बहन तथा ब्र.कु.केदार भाई को सम्मानित करते हुए तेलंगाना की महामहिम राज्यपाल बहन टी.सुन्दरराजन। साथ में है ऊर्जा मंत्री भ्राता जगदीश रेड्डी तथा अन्य।

पुखरायाँ- उ.प्र.के उपमुख्यमंत्री भ्राता केशवप्रसाद मौर्य जी व विधायक भ्राता विनोद कटियार जी को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.ममता बहन।

गोंदिया- महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष भ्राता नाना पटोले को शाल, पुष्पगुच्छ और ईश्वरीय सौगात देकर सत्कार करते हुए ब्र.कु.रत्नमाला बहन।

सम्बलपुर- 'चुनौतीपूर्ण समय में अचल रहना' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.पार्वती बहन, डॉ.बी.एम.मिश्रा, डॉ.जयश्री डोरा, डी.आर.डी.ए.के पी.डी.भ्राता एस.त्रिपाठी, हिन्डालको इन्डस्ट्रीज के यूनिट हैड भ्राता जे.पी.सिंह तथा अन्य।

उज्जैन- ब्र.कु.विवेक भाई को विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि से विभूषित करते हुए विक्रम शीला हिन्दी विद्यापीठ के कुलाधिपति डॉ.सुमन भाई, उप-कुलपति पूर्व न्यायाधीश भ्राता एम.सी.मिश्रा तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50. Issue : February, 2020.

रायपुर- सर्व मंगल आध्यात्मिक महाकुम्भ का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, छ.ग. के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेश बघेल, राजयोगिनी दादी जानकी जी, महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके तथा ब्र.कु. कमला बहन।

इन्दौर- स्वर्णजयन्ती कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. हेमलता बहन, ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. हंसा बहन तथा अन्य।

इन्दौर (ओम शान्ति भवन)- नेमावर रोड पर शिव शक्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर की शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु. हंसा बहन तथा अन्य।